श्री सावा शक्ति मंगल पाठ

धानुका परिवारों की कुलदेवी
फतेहपुर - शेखावाटी

-: मंगलपाठ संचालक :-

श्री धानुका सावा शक्ति प्रचार समिती (मुंबई)
महाराष्ट्र

किस्मत वाले होते हैं जो माँ की महिमा गाते हैं।
लिखा नहीं जो किस्मत में वो माँ से सब पा जाते हैं।

स्व. श्री ओमप्रकाश बालुरामजी धानुका

की पुण्य स्मृति में सप्रेम

श्रीमती निर्मलादेवी ओमप्रकाश धानुका
श्री नंदकिशोर धानुका
श्री सुभाष धानुका
श्रीमती रंजना सुभाष धानुका
कुमार ध्रुव सुभाष धानुका

।। श्री गणेशाये नमः ।। ।। श्री सावा सत्ये नमः ।। ।। श्री हनुमते नमः ।।

श्री सावा शक्ति मंगल पाठ

(नित्य मंगलपाठ) **प्रथम संस्करण - 2020**

- रचयिता -
श्री मंगलजी "मंगल" (लक्ष्मणगढ़वाले)

-: प्रकाशक :-

धानुका सावा शक्ति मंदिर
फतेहपुर - शेखावाटी (राज)

-: मंगलपाठ संचालक :-

श्री धानुका सावा शक्ति प्रचार समिति (मुंबई)
304, गोकुल रेसिडेंसी, एच विंग, ठाकुर विलेज
कांदिवली (पूर्व), मुंबई - 400 101
: 9372184944 : info@savashakti.com
/dsspsmumbai /dsspsmumbai

श्री सावा शक्ति दादी का संक्षिप्त परिचय

भारत वर्ष में नारी जाति सर्वदा सम्माननीय रही है, इसका प्रमुख कारण इस जाति की सच्चरित्रता है। सच्चरित्रता के साथ साथ कर्तव्य परायण होने के कारण नारी जगत सबका मातृत्व पूज्य बना हुआ है। भारत वर्ष का इतिहास ऐसी सच्चरित्र नारीयों की गाथाओं से परिपूर्ण है। चितोड़गढ का जौहर सतीत्व रक्षा का ज्वलन्त प्रमाण है। श्री सावा सति का जीवन चरित्र वर्णन करने के लिए कलम उठाते ही हृदय तंत्रिका झनझना उठती है । सावा सतीजी की शक्ति प्रताप एवं दृढविश्वास पर अचंभित एवं नतमस्तक तक हो जाना पडता है।

धन्य है राजस्थान की मरू भूमि जिसने ऐसी सन्तानों को जन्म दिया है धन्य उन माताओं को जिनकी कोख से ऐसी सन्तानें उत्पन्न हुई। जिनके जीवन चरित्र को पढकर हम भारतवासी ही नहीं बल्कि वेदेशियों ने भी मुक्त कंठ से यही कहा है कि धन्य हो भारत भूमि धन्य हो राजस्थान।

शेखावाटी जनपद की यह पावन धरती अनेको देवी देवताओं एवं सतियों की पून्य प्रसूता रही है। धानुका कुलकी एक सती फतेहपुर शहर में शमसानियां क्षेत्र में हुई जो शेखावाटी राजस्थान में सावासती के नाम से प्रसिद्ध है। मूलस्थान फतेहपुर शेकावाटी में ही सावा शक्ति का मंदिर बना हुआ है। जन्म का नाम पारस है। (पारस) सावा का जन्म माघ सुदि ५ संवत १६५७ वसंत पंचमी के दिन राजस्थान के सीकर जिला फतेहपुर शेखावाटी में श्री पारखचन्दजी गरगोत्री के गृहस्थाँगन मे श्रीमति उमदादेवी की कोख से ज्येष्ठ पुत्री के रूप में हुआ। तब विधाता का ऐसा चमत्कार हुआ कि वो रोने की बजाय मुस्काराई। ग्राम के सभी लोग देखने के लिए आने लगे तथा ग्राम में चारो तरफ उल्लास और खुशियां छा गई। गांव वासीयोंने (पारस) सावा के भाई नहीं होने से घरमें उदासी छाई रहती थी। रक्षाबंधन पर राखी बंधवाने वाला तथा वंशवृद्धि करनेवाला कोई नही था। मां को उदास देखकर (पारस) सावा मे मां से कहा कि मेरी हथेली में मेंहदी लगाओ, मेंहदी के बहाने वो चमत्कार दिखाना चाहती थी। जैसे ही मेंहदी दिखने लगे और कहा मां अब मेरे छोटे भाई का प्रादुर्भाव होगी। कुछ समय बाद ही मां उमदादेवी गर्भवती हुई और एक पुत्र रतन को जन्म दिया। इस प्रकार (पारस) सावा के चमत्कार से पुरा परिवार खुशहाल हो गया। (पारस) सावा का विवाह मंगसिर बदि अष्टमी मंगलवार संवत १६७० अर्थात १२ वर्ष ११ महिने १७ दिन की आयु में रतनगढ़ के अग्रवाल धनुका परिवार में श्री भोलारामजी धानुका के पुत्र परमेश्वर जी के साथ में होना निश्चित हुआ। विवाह की कुछ घडियां शेष थी दुल्हा बारात के साथ तोरण के लिए

द्वार पर आने ही वाला था। सहनाईयां और बाजे बज रहे थे। (पारस) सावा बाई बनी संवरी वरमाला लिए अपने पति परमेश्वर के दर्शन के लिए तैयार खड़ी थी कि किसीने आकर बुरी खबर सुनाई कि दुल्हा और बारात तोरण रश्म के लिए सावा के घर आ रहे थे कि दुल्हे सहित पुरी बारात को अचानकर डाकूओने चारो तरफ से घेर लिया। तथा बरातियों के गहने नगदी सब छीन लिए। जब डाकू दूल्हे कि और बढे तो दूल्हे ने भी अपना धर्म निभाते हुए डाकुओं का सामना किया। अचानक दुल्हा परमेश्वर के सीने पर मुख्य डाकू का तीर लगा और दुल्हा वही पर वीर गति को प्राप्त हो गया। चारो तरफ कोहराम मच गया। हर्ष शोक में बदल गया। खबर इतनी हृदय विदारक थी कि किसी को भी नहीं सुझा कि क्या करे सब रोने धोने लगे, लेकिन पारस सावा चढी थी दुल्हन बनी हुई थी अपनी माता से कहा।

सावा अपनी मां से कहती, सतीनारी पति के संग रहती
जनम जनम का साथी मेरा, है माता दामाद वो तेरा
सति होऊंगी उनके संग, पारस परमेश्वर के संग
सावा दुल्हन बनी हुई, पास पति के जाय।।

(पारस) सावा वहां का दृष्य देखकर पति के पास आई, मृत पति को गोद में लेकर माथे को सहलायां। उसी समय पारसका चंडी रूप बन गया तथा सावा के आवाहन करने से वही पर सिंह प्रगट हो गया। सावा पति की तलवार लेकर सिंह पे चढी डाकू दल को मारा कुछ डाकू घबराकर भाग गये चारों और सन्नाटा छागया। डाकू दल का मुखिया हाथ जोड़कर (पारस) सावा के चरणों में गिर गया सावाने विधि के विधान को समझकर उसको क्षमा कर दिया, और चिता तैयार करने का आदेश दिया, चिता तैयार हुई सावा दुल्हन बनी हुई अपने पति की मृत देह को गोद में लेकर अग्निरथ पर बैठ गई। अपने सतित्व के बलपर सुहाग को अक्षुण्य बनाये रखकर चिता को स्वयं प्रज्जवलित कर लिया और परिवार के वे परिजन पुरजन के सभी लोगों के सामने मंगसिर बदि ८ अष्टमी संवत १६७० यानि १२ वर्ष ११ महिने १७ दिन की आयु में सति हुई। उनकी चिर स्मृति हेतु बिरादरी वालों ने उनकी चिता के स्थान पर एक सुन्दर मठ का निर्माण करवा दिया। उसी समय से भारत वर्ष के सभी धानुका परिवार इन्हे सावा शक्ति दादी के रूप मे मानते है तथा पूजा धोक जात जडुला सवामणी छप्पन भोग करने बराबर फतेहपुर सावा शक्ति दरबार में आते है और सावा शक्ति दादी उनकी सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण करती है। श्री श्री सावा सतीजी के महात्म्य एवं जीवन चरित्र को जो कोई भक्त सच्चे मनसे प्रेम पूर्व पढेगा या सुनेगा श्री श्री सावा सतीजी उनकी सकल मनोरथ कामना अवश्य पूर्ण करेगी, ऐसा मन में दृढ विश्वास रखना चाहिए। क्यों कि कहावत है विश्वासम् फलम दायकः।

श्री श्री १००८ श्री रतिनाथजी महाराज

बऊधाम पीठाधिश्वर
लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थान
(इस मंगलपाठ की रचना श्री रतिनाथजी महाराज के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से हुई है।)

आशीर्वचन

श्री धानुका सावा शक्ति दादीजी के मंगलपाठ की रचना दादीजी की कृपा एवं आशीर्वाद से ही हुई है। आप सभी भक्त इस मंगलपाठ को हृदयपूर्वक अपनाकर नियमित पाठ करें। दादीजी की कृपा से मन इच्छा फल अवश्य प्राप्त होगा।

मंगलपाठ में आवश्यक सामग्री

५ लड्डु
(सजन गोठ के लिए)
मेहन्दी
सुहाग पीटारी
पोषाक (वधु की)
पोषाक (वर की)
पोषाक (कन्यादान)
रोली, मोली,
चावल, पुष्प
दूध
गोयठा (छाणा)
घी २.५ किला

अगरबत्ती
माचीस
खोपरा १.२५ किलो
कपूर - १ पेकेट
इत्तर
प्रसाद
फल-५ प्रकार का

दादीजी जन्मोत्सव

(१) पंचमेवा
(२) सिक्का (बधाई)
(३) चोकलेट
मीठा पान ११ या २१

घरका सामान

आरती की थाली - २ नंग
थाली - ६ नंग
कटोरी - ४ नंग
चम्मच - २ नंग
ज्योत कुण्ड
टोपिया - (घी-खोपरा)
२ नारीयल
१ तांबे का कलश
चोकी (व्यासपीठ)
आसन ४ नंग
श्रद्धानुसार

गणेश वंदना

म्हारा प्यारा रे गजानंद आईज्यो, रिद्धि सिद्धि ने सागै ल्याईज्योजी... म्हारा
थाने सबसे पहल्यां मनावां, लड्डुवन को भोग लगावां, थे मुसक चढ़कर आईज्योजी...म्हारा
माँ पार्वती का प्यारा, शिव शंकर लाल दुलारा, थे बांद पाघडी आईज्योजी...म्हारा
थे रिद्धि सिद्धि का दात्तारी, थाने ध्यावे दुनिया सारी, म्हारा अटक्या काज बनाईज्योजी...म्हारा
थारा सब सेवक गुण गावे, चरणां में शिश नवावे, म्हारी नैया पार लगाईज्योजी...म्हारा

गणपती जी आज मनावाँजी, सब मीलकर
सब देवाँ में प्रथम मनावाँ, चंदन तिलक लगावाँजी... सब मीलकर
शिव शंकर का पुत्र लाडला, गौरी लाल ने ध्यावाँजी... सब मीलकर
विघ्न निवारे देवा कारज सारे, चरणां में शिश नवावाँजी... सब मिलकर
धुंध धुंधाला देवा सुंढ़ सुंढ़ाला, लड्डुवन भोग लगावाँजी... सब मिलकर
थे हो गजानंद बिड़द विनायक, जगमग ज्योत जगावाँजी... सब मिलकर

गजानंद सरकार पधारो, कीर्तन की सब त्यारी है
आओ आओ बेगा आओ, चाव दरश को भारी है
थे आओ जद काम बणेला, थां पर सारी बाजी है
रणत भंवरगढ़ वाला सुणल्यो, चिंता म्हारे लागी है
देर करो मत ना तरसाओ, चरणा अरज गुजारी है...
रिद्धि सिद्धि संग ले आओ विनायक, द्यो दर्शन थारा भक्तानें
भोग लगावाँ धोक लगावाँ, पुष्प चढ़ावाँ थारे चरणा में
गजानंद थारे हाथां में अब तो लाज हमारी है....
भक्तां कि तो विनती सूणली, शिव सूत प्यारो आयो है
जय जय कार करो गणपती की, आकर मान बढ़ायो है
बरसैलो रस अब भजना में, नंदु महिमा भारी है

दादीजी का मंगलपाठ प्रारम्भ करने से पहले गणेश वन्दना के पश्चात गाये जानेवाले पारम्परिक भजन

।। श्री पितरजी ।।

जय जय पितरजी महाराज, मौं शरण पड्यो हूँ थारी।

आपरी रक्षक, आप ही दाता, आप ही खेवन हारे।
मैं मूरख हूँ कुछ नही जानूं, आप ही हो रखवारे

आप खड़े है हर दम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी
हम सब जन हैं शरण आपकी, है ये अरज गुजारी

देश और परदेस सब जगह, आप ही करो सहाई।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई

मैं भी आयो शरण आपकी, अपने सहित परिवार।
रक्षा करो आप ही सबकी, रटूँ मैं बारम्बार

ज्योत

माई ए थारी ज्योत सवाई ए, दादी ए थारी ज्योत सवाई ए,
कोई बैठी मन्दिर मांय, करो भक्तां की सुनाई ए ।।टेर।।

दूर - दूर से यात्री आवे, थाँसू करे पुकार,
चिन्ता चरो, हरो पीड़ा नै, दोनूँ हाथ पसार,
खड्या सब लोग लुगाई ए...।।1।।

गाँव फतेहपुर मां सती दादी, लग्यो थारो दरबार,
मैं भी थारो दास भवानी, करूँ थारी मनुहार,
करो मेरे मन की चाहि ए...।।2।।

भीड़ पड़ी भक्तां रै ऊपर, जद थे कीन्ही म्हैर,
मेरी बरियां आज लगाई, कईयाँ इतनी देर,
मेरें तो इब नाहिं समाई ए...।।3।।

।। आवाहन ।।

धोये धोये आंगणा में आवो म्हारा दादीजी,
बालकिया बुलावै बैगा आवो म्हारा दादीजी ।।
फुला से थारी झाँकी सजी है, कण कण में थारी छवी बसी है,
चढ़ सिंह पीठ पधारो म्हारा दादीजी...
तेज तुम्हारो मैया चम चम चमके, मुख मण्डल की आभा दमके,
सत्य की ज्योत जगावो म्हारा दादीजी...
भादवा में लागे मेळो भारी दुर दूर से आवे नर-नारी,
छप्पनभोग स्वीकारो म्हारा दादीजी...
संकट में तु दौडी-दौडी आवे, भगतां को तू मान बढावे,
बाळका रो मान बठावो म्हारा दादीजी...

।। माँ की महिमा ।।

जगदम्बे भवानी मैया, तेरा त्रिभुवन में छाया राज है,
सोहे वेष कसुमल नीको, तेरे रत्नों का सिर पे ताज है ।।टेर।।

जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे,
अधम उद्धाहरण तारण मैय्या, युग युग रूप अनेक धरे,
सिद्ध करती तूं भक्तों के काज है, नाम तेरो गरीब निवाज है।।

जल पर थल और थल पर सृष्टि, अदभूद थारी माया है,
सुर नर मुनिजन ध्यान धरै नित, पार नहीं कोई पाया है,
थारे होथों में सेवक की लाज है, लियो शरणों तिहारो मैय्या आज है।।

जरा सामने तो आओ मैय्या, छुप-छुप छलने में क्या राज है,
यूँ छुप ना सकोगी मेरी मैय्या, मेरी आत्मा की ये आवाज है।।

मैं तुमको बुलाऊँ, तुम नहीं आवो, ऐसा कभी ना हो सकता,
बालक अपनी मैय्या से बिछुड़कर, सुख से कभी ना सो सकता,

मेरी नैय्या पड़ी मझधार है, अब तूं ही तो खेवनहार है,
आजा रो रा पुकारे मेरी आत्मा, मेरी आत्मा की ये आवाज है।।

दादीजी के मंगलपाठ की महिमा का गीत

लोटरी लग जायेगी, किस्मत खुल जायेगी।
करो मन से मंगलपाठ, तो दुनिया बदल जायेगी।

क्युं फिरतां तुं मारा मारा, होकर के बेहाल
भाव से मंगल माँ को सुना, कर देगी माला-माल
प्रार्थना रंग लायेगी, ये झोली भर जायेगी... करो मन से

जैसे भागवतजी के अंदर, खुद बैठे है कन्हैया
वैसे ही मंगल के अंदर, बैठी है मेरी मैया
तिजोरी भर जायेगी, तेरे भी घर आयेगी... करो मन से

वार, तिथि, मुर्हुत मत देखो, जब भी समय हो गालो
मंगल ही गंगा जमुना है, माथे इसे लगा लो
शनि, राहु, केतु, ये दुर भगाऐगी... करो मन से

मंगल पढने में हमसे, शायद गल्ती हो जाये
या कामकाज के कारण, कोई भुलचुक हो जाये
अंबरीश जयकार लगा, गल्तीयाँ भुलायेगी... करो मन से

(मंगल पाठ मंगलाचरण से प्रारम्भ करें)

मंगलाचरण

।। श्री गणेशाय नमः ।।

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगध्दिताय ।
नागाननाय श्रृतियज्ञ विभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।

।। श्री गुरू वंदना ।।

ब्रह्मानंदं परं सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वंन्दातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्षम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वादिसाक्षीभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तंनमामी ।।

।। श्री सरस्वती वंदना ।।

वीणाधरे विपुलमंगल दानशीले
भक्तार्ति नाशिनी विरंचि हरीश वन्दे ।
कीर्तिप्रदेखिल मनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनी सरस्वती नौमि नित्यम् ।।

।। श्री हनुमत वंदना ।।

मनोजवं मारूततुल्य वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं श्रीरामदूतम् शरणं प्रपद्ये ।।

।। श्री सावा वंदना ।।

सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातने ।
गुणाश्रये गुणमये सावा शक्ति नमोऽस्तुते ।।
सर्व मंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ।।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: प्रथम स्कंध :

दिव्य रूपाश्चः महामाया शक्ति मंगलकारिणी
सुख सौभाग्य दात्रीच सावा दैव्यै नमो नमः

: भाषा टीका :

दिव्य रूपमयी, दिव्य रूप देने वाली, महामाया
सावा शक्ति मंगल करने वाली, सुख और सौभाग्य
देनेवाली सावा देवी को बारंबार प्रणाम है ।।

: दोहा :

श्री गणेश ऋिद्धि सिद्धि सहित, लक्ष्मी मात प्रणाम ।
सावा शक्ति को नमन है, दादी सुख की धाम ।।१।।

रामचंद्र सीताजी के, धरुं चरण में शीश ।
सालासर हनुमानजी, दिजिये शुभ आशिष ।।२।।

कुलदेवी शाकंबरी माँ, अग्रसेन महाराज ।
शारद सतवाणी दे ब्रह्मा, हरी शिव संत समाज ।।३।।

योगेश्वर श्री कृष्णचंद्र, राधा पद अनुराग ।
भग्त जान किरपा करो, सुप्त जगावो भाग ।।४।।

शीश नवावू बुल्द्धगिरी, बाबा लक्ष्मीनाथ ।
स्वीकारो आदेश थे, औधड़ अमृत नाथ ।।५।।

चांद सूरज शुभ धरती माँ, सबही करो सहाय ।
ब्यास बाल्मिक नारद तुलसी, आशिष दो हरसाय ।।६।।

ग्राम देव कुल देवता, पीतृ देव सरकार ।
चरण नवू माता पिता के। पायो जीव निखार ।।७।।

मन प्रशन्न कर चाव से, होकर भाव विभोर ।
सावा सति मंगल पढ़े, सुख बरषे चहुं और ।।८।।

शुभ करे कल्याण करे, हो आरोग्य धन धामी ।
शत्रू बुद्धि विनाश करे, दीपक ज्योति नमामी ।।९।।

नित्य नया सत्कर्म हो, नित उठ करुं प्रणाम ।
सावा शक्ति महर से, जहां रहुं सुख धाम ।।१०।।

चौपाई

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
जय जय सावा शक्ति माता । करु प्रणाम सकल सुख दाता ।।
सत् से सत्यदेव सब साजे । परम ईश के शीश विराजे ।।
सत्य मुकुट बन मस्तक चमके । तीन लोक मे सत्य ही दमके ।।
चौमुख दीपक सत्की ज्योती । हरी ब्रह्मा के मन का मोती ।।
सत् से शिवजी शिखर चढ गये । सब देवो से आगे बढ गये ।।
शिवा लक्ष्मी ब्रह्माणी सत् पर । सारी सतियां सत् के रथ पर ।।
सत्य बना अमृत का प्याला । सत्य करे अग जग उजियाला ।।

सावा सती के चरणो में, नित्य करुं प्रणाम ।
धन बल बुद्धि सिद्धियां, दिजिये मां सुखधाम ।।११।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
शेखावाटी सत् की धरती । बहुस्नेह सब सतियां करती ।।

राजस्थान मे सदा विचरती । भक्त जनन की रक्षा करती ।।
करमा मीरा जैसी भक्ति । जीणमात शाकम्बरी शक्ति ।।
माता सती नाम अति पावन । सावा मंगल पाठ सुहावन ।।
सावा मंगल सुखद अपारा । गावही सुनही होत भव पारा ।।
मंगल मूर्ति मंगल ज्योती । जिस पर तेरी ममता होती ।।
वो सेवक अति है बड़ भागी । जो सावा सती पद अनुरागी ।।

श्री सावा शक्ति मैया, चिर आनन्द स्वरूप ।
काज सवाँरे भग्तों के, माता रूप अनूप ।।१२।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
मन से शरणागत हो जाता । मनवांछित फल निश्चय पाता ।।
कथा सरित तव विमल प्रीतिकर । मंगलपाठ तिहारो घर घर ।।
सावा सतीका चरित है प्यारा । सहज कामना पूरन वारा ।।
मन की खटपट सभी मिटावो । सावा सती का मंगल गावो ।।
कुटुम्ब स्नेही पोता पोती । घर मे अनधन माणक मोती ।।
लक्ष्मी करदे माला माल । माता सबको करें निहाल ।।
रूके हुए सब कारज सारे । आगे का भी संकट टारे ।।

मंगलमयी ममतामयी, मैया का धर ध्यान ।
सावा शक्ति मंगल का, करो नित्य गुण ज्ञान ।।१३।।

भारत राजस्थान के, सरहद में एक गांव ।
सभी सुखी परिवार थे, लेते प्रभू का नांव ।।१४।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
शहर फतेहपुर नाम बताया । मरूधर के इतिहास मे आया ।।

कैर खेजड़ी बालू धोरा । चहके पक्षी नांचै मोरा ।।
क्षत्री विप्र वैश्य और शूदर । निर्मल मनही कुटिल ना उदर ।।
गुरू जन विद्यादान करंता । शूरवीर सब आन भरंता ।।
सब सम्मानित अग्रवाल गर । अग्रसेन उजियाल भानुकर ।।
सभी लोग सत्कर्म कमाते । पर सेवा से नही अघाते ।।
भरे साख ब्रह्मांड समुचा । गली गांव हर कूंचा कूंचा ।।

फतेहपुर में पारखी, सत् गुण सम इन्सान ।
अग्रवाल गर गोत्र था, कृपा करही भगवान ।।१५।।

पती परायणा गृह लक्ष्मी, उमदा देवी नाम ।
गृहस्थी धर्म निभावती, भजती हर को नाम ।।१६।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
अपने गांव में रहते सुख से । विचलित थे छोट से दुःख से ।।
बिन सन्तान उदासी छाई । करें प्रार्थना मन में आई ।।
हिंग्लाज मां के मंदिर में । करी वंदना आरत स्वर में ।।
हिंग्लाज मां मंड में राजी । शंक घड़ावल नोपद बाजी ।।
प्रगट भयी माता आनंद से । बोली उमदा पारखचंद से ।।
नया रूप प्रगटावूंगी में । सावा सती कहावूंगी में ।।
मेरी शक्ति वास करेगी । पूर्ण सभी की आस करेगी ।।
होगई अंतर्ध्यान भवानी । पुर इतिहास की सत्य कहानी ।।
गर्भवती हुई उनकी नारी । पारखचन्द ने भली विचारी ।।

अपने ग्यान का आदर करते । जो कहते वो सच्चा कहते ।।
पारखचंद और उमदा बाई । दोनों के मन खुशियां छाई ।।
संवत सोलह सो सतावन । दिवस बसंत पंचमी पावन ।।
आश्रय जन्म हुवा अभिमत के । खेल निराले है सब सत् के ।।

माघ सुदि शुभ पंचमी, दिन था मंगलवार ।
मध्य निशा में जन्म हुवा, छाई खुशी अपार ।।१७।।

फूलों की वर्षा हुई, हो गये सभी निहाल ।
मात पिता के घर मांही, बाजे मंगल थाल ।।१८।।

छन्द

जय जय पारस जय जय सावा शक्ति मां दुख टारिणी
जय जय ज्योति आदि शक्ति दुर्गा दुष्ट संहारिणी

भाल सुशोभित रोली अक्षत खड़ग त्रिशूलं धारिणी
लाल चूनड़ी चमक चहू दिशि पायल नूपूर बाजिणी

आरती मणिमय मंदिर में नित घनन घड़ावल गाजिणी
श्री फल भेंट धरे सत् व्यंजन माता सिंह सवारिणी

करूणामयी करूणाकर मैया करो कृपा दुःख मोचिणी
मैया पार करो मेरी नैया अमल कमल दल लोचिनी

किन्नर गावत सुरगण ध्यावत माता विघ्न विडारिणी
शक्ति शरणं पुनि पुनि नमनं सावा मंगल कारिणी

जब जब जन्म दिवस आयेगा प्रगटेगी मेरी मैंया
भगत बधावा गासी सखियां गावेगी बधैया...

भगत बधाई बाँटे किसीको न कोई नाटे
नाच रही खुशियां आंगण में
पाई न बधाई वो तो करी न कमाई
कोई मत शरमाना मांगण में
लाज शरम सब छोड़के नाचो, नाचो ताता थैया...

गली गली भवन भुवन सब सज रहे
बज रहे बाजे मंगल में
चित मांही चाव होवे मन मे उछाव होवे
आनंद बरसे पल पल में
तोपां छुटे नील गगन में, गूंजेगी शहनाईयां...

चन्द्रमां सा रूप सोहे मुख की लल्लाई मोहे
काजल तिलक ललाटन मे
दर्श पर्श पावूं वारी बलिहारी जावूं
खुशी होवे खुशियां बाँटन में
"मंगल" नजर उतार लेवुं में, सौ सौ बार बलैंया...

:: दोहा ::

भाव सहित जो भी पढे, यह पहला सौपान ।
निश्चय गोद भरे मंगल, हो विश्वासी मान ।।१९।।

- : इति प्रथम स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है ।
श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेरो है ।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: द्वितीय स्कंध :

शुभा संकल्प सिद्धाः कामाख्या कुल तारिणी
सौभाग्य ज्योति रूपा सावा शक्ति नमोऽस्तुते ।।

: भाषा टीका :

शुभ फल देनेवाली संकल्पों को सिद्ध करने वाली कामाख्या रूपा भगवती कुल को तारनेवाली सौभाग्य प्रदान करने वाली, ज्योति स्वरूप श्री सावा शक्ति मैया को बारंबार नमस्कार है ।

भाव शरीर से चलो सभी, चाव सहित जय बोल ।
जहां जननी की गोद में, कन्या रतन अमोल ।।१।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
जोशी पंडित लिया बुलाई । चूड़ा करण रश्म करवाई ।।
पंडित पंचागी बल बोले । भेद योग ग्रहों का खोले ।।
पारस देवी नाम बताया । आगे का भविष्य समझाया ।।
आंगन शुभ घर महकायेगी । सुगंध सत्की जग छायेगी ।।
कीरती कुल की फैलायेगी । परम यशस्वी वर पायेगी ।।
चूनड़ी से इसका है नाता । ग्रह नक्षत्र कहत विधाता ।।
जैसी रीत नेग सब किन्हे । लेय दक्षिणा द्विज जल दीन्हे ।।

श्री जननी की गोद में, सारे सब का काम ।
बाल रूप पारसदेवी को , करीये सभी प्रणाम ।।२।।

मां सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
बाल अवस्था पारस पागई । थोड़े दिन में शिक्षा आगई ।।
कछुक दिवश पहले ही देखा । चमत्कार एक हुआ अनोखा ।।
महल अटारी धरती सारस । जित देखे उत पारस पारस ।।
माँ के मनमे चिन्ता छाई । पारस के कोई है नही भाई ।।
वंश बढेगा केही विधि आगे । कौन बंधावे राखी धागे ।।
दुनिया ताना देवण लागी । पारस की सुरतां जब जागी ।।
पारस ने पहिचान लिया है । मां का दुखड़ा जान लिया है ।।

निजकुल पे किरपाकरी, दिन्हो वंश बढाय ।
पुत्र रतन धन दे दिया, श्री सावा मेरी माय ।।३।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
मेहन्दी का कर लिया बहाना । हाथो मे शुभ चिन्ह दिखाना ।।
दोनो हाथो में दिख लाया । स्वस्तिक और त्रिशूल दिखाया ।।
बड़ी पारस एक छोटा भाई । सांची प्रीत कही नही जाई ।।
बहिन भाई का प्रेम अपारा । प्रेम ही सत्यलोक की धारा ।।
बाल अवस्था खेल हो गया । तरूणाई से मेल हो गया ।।
वर्षा ऋतु और सावन आया । सिनारा का उत्सव छाया ।।
मौसम तीज त्योहार सुहाना । झूलन प्यारा लगे झुलाना ।।

झूले झूला पारस सावा, रिम झिम है बरसात ।
झूला झूलावे सहेलियां, झूलन की क्या बात ।।४।।

झूला झूले पारस सावा सखि सहेली साथ
झूला झूलण री रूत आई ऽऽऽ झूला...

मोर पपीहा बोले बागां मे कोयल काली
पारस झूला झूलें उमरीयां है बाली
बरसे हां बरसे सुहनीसी बरसात, झूला...

लूभा रही है मन को ये हरि हरि हरियाली
पारस को सब निरखै झूमे है डाली डाली
झूमे मन झूमे हवा से करे बात, झूला...

झूले पे है सावा संग सखियों की टोली
कोई ग्यान पिटारी खोली कोई 'मंगल' करे ठिठोली
हरसे मन हरसे हो पहली मुलाकात, झूला...

:: दोहा ::

सावन पूर्ण होत ही, राखि का त्योहार ।
प्रेम से राखि बांधे बहिना, प्रेम है जीवन सार ।।५।।

सावन महिना आया राखि का त्योहार ।
बहिन भाई के राखि बांधे मनमे खुशी अपार ।।
पावन पर्व है रक्षा बंधन, भारत की महिमा का चंदन
शगुन मना भाई के मुख मै मिठाई डार, बहिन...
तिलक लगा के श्री फल देवे, बहिन भाई की बलैया लेवे
उमर हजारी मांगे वो आरती उतार, बहिन...

समय चक्र चलता सदा, रैन दिवस रहे बीत ।
झूलत खेलत पारस का, बचपन हुआ व्यतीत ।।६।।

मन पंछी उड़ चल वहां, देखो नगर खुशाल ।
पारस सावा का जहां, सुन्दर शुभ ससुराल ।।७।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
शेखावाटी मे वो रहते । नगर शेठ नगरी के कहते ।।
भोलाराम सदा शुभनाम । रतनगढ है जग सरनाम ।।
धीरवान शेठाणी उनकी । दया धर्म दातारी धुनकी ।।
बेटा उनका चतुर सुजानी । सुघड़ सलोना नही गुमानी ।।
मात पिता भ्रातादिक सारे । सगे सम्बंधी सभी सुप्यारे ।।
मालिक की माया है भारी । जान सकत कोई तपधारी ।।
साधु का सम्मान करेगा । मंगल निश्चय मोद भरेगा ।।

सावा पारस की लीला से, भरा पूरा स्कंध ।
परिवारिक जीवन से जोड़े, छुटे व्यर्थ समंध ।।८।।

-: इति द्वितीय स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है । श्री बाकें बिहारी नन्दलाल मेरो है ।।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: तृतीय स्कंध :

त्वं सिद्धिस्त्वं स्वधा स्वाहा सुधात्वं लोक पावनी
संध्या रात्री: प्रभा भूर्ति मेघा श्रद्धा सरस्वती

: भाषा टीका :

हे देवी ! तुम सिद्धि हो स्वधा हो और तुमही स्वाहा हो ।
अमृतमयी और तीनो लोको को पवित्र करनेवाली हो
हे माता । तुम ही संध्या हो रात्री प्रभा विभूति मेघा और
सरस्वती हो हम सब तुम्हे नमस्कार करते है ।।

जैसे सुदी का चन्द्रमा, नित नित बढता जाय ।
पारस सावा बढ रही, मां पितु के मन भाय ।।१।।

सोमवार सोलह किया, सावा ने व्रत राख ।
मनोकामना पूर्ण हो, शिवगोरी की साख ।।२।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
शिव पूजा कर पारस बाई । मात पिता से आशिष पाई ।।
आपस मे मां पितु बतियाई । पारस की अब करे सगाई ।।
पंडित नाई को भिजवाये । समाचार शुभ वो नही लाये ।।
उनके लायक वर नही पाया । सुन दम्पती मन चिंता लाया ।।
चिन्तित रात बीत गई सारी । चिन्ता हरली पारस प्यारी ।।
पारस ने शुभ स्वप्न सुनाया । वर के घर का पता बताया ।।
दोनो के मन खुशियां छाई । जोशी नाई पुनः पठाई ।।

स्वर्ण अशर्फि लेयके, पहुँचे उनके द्वार ।
सावा के ससुराल मे, छाई खुशी अपार ।।३।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
जोशीजी और नाई आये । पारस के घर का गुण गाये ।।
मात पिता और परिजन साने । सावा के गुण बहुत बखानें ।।
जब वो सबकी स्वीकृति पाई । श्रीफल दीन्हा तिलक लगाई ।।
सब ही हृदयमें खुशियां छाई । अभिजित मुहुर्त मे हुई सगाई ।।
सबके मन मुस्कान बिराजी । हो गया सबका मनवा राजी ।।
बिदा हुए वो पत्री लेकर । दोनो पहुंचे पारस के घर ।।

समाचार सब कहदिये, दीन्ही पत्रि थमाय ।
मात पिता भी खुश हुए, सबको बांच सुणाय ।।४।।

कई बार बांची चांव से, पाती परम पुनीत ।
पारस की माँ सुन करके, शुभारंभ की रीत ।।५।।

पत्री मे यह लिखा हुवा, लगन योग के साथ ।
मंगसिर बदि आठम कि शादी, सावो लेवो हाथ ।।६।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
ध्यान गजानन का सब कीजे । हो प्रशंन सब कारज कीये ।।
विवाह हेतु डोरी कर लीजे । सबही मंगल अमृत पीजे ।।
परिजन मन आनंद समाये । समधी दोनो भवन सजाये ।।
रंग रोगन से घर चमकाये । मुख्य द्वार चित्रित करवाये ।।
कुम कुम पत्री लिखवाई है । रणथम्बोर भिजवाई है ।।

प्रिय जन सगे सम्बधी भाई । सबको पत्रिका पहुँचाई ।।
भात न्यूतन कि रश्म निभाई । बहिन भाई के तिलक लगाई ।।

कुटुम्ब स्नेही लाईयो, आईयो सब मिल साथ ।
पारस सब की लाडली, शगुन भरा हो भात ।।७।।

गीत भात न्यतन का

बीरा म्हाँरे रिमक झिमक भत्ती आज्यो
थे आज्यो रिद्ध सिद्ध ल्याज्यो जी – म्हाँरे...

बीरा म्हाँरे थे आज्यो भावज ल्याज्यो
संग लाल भतिजो गोदी ल्याज्योजी – म्हाँरे...

बीरा म्हाँरे माथै नै मैमद ल्याज्यो
म्हाँरी रखड़ी बैठ घड़ा ज्योजी – म्हाँरे...

बीरा म्हाँरे काना में कुण्डल ल्याज्यो
म्हारी नथ में मोती पुवाज्योजी – म्हाँरे...

बीरा म्हाँरे हाथा नै चुड़लो ल्याज्यो
संग लाल चूनड़ी ल्याज्योजी – म्हाँरे...

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
भात न्यूत आये अपने घर । काज संवारे सब खुश होकर ।।
कुलदेवी पित्तर जी ध्याया । मंदिर मैया का सजवाया ।।
पारसजी के भी ससुराल । निभा रहे सब रश्म रसाल ।।
बान मेल और हुई बनोरी । मंगल गीत निकासी होरी ।।
बदन बना का क्या ही कहना । घोड़ी के बाजे सब गहना ।।

बीन्द विनायक घोड़ी ऊपर । हो रही लूणराई बन्ने पर ।।
सर्व सुहागन गीत उचारे । घोड़ी के तो ठुमके न्यारे ।।

घोड़ी नांचत ताल पर, निरख रहे नरनार ।
सब ही शगुन मना रहे, बन्ना बहुत सुप्यार ।।८।।

घोड़ी गीत

तर्ज : इचक दाना, बिचक दाना...

ठुमक ठुमक घोड़ी नाँचे घोड़ी का क्या कहना, ठुमक...
झन् झन् झन् झन् गहना बाजे गहनो का क्या कहना, ठुमक...

घोड़ी पै बैठा है इक दूल्हा राजा
शहनाई बाजे बजे बैण्ड बाजा
ओऽऽऽऽ काजु मेवा चूगो चुगावे
चुगने का क्या कहना ठुमक - २...

गहनो कि धुन से जो संगीत बजता है
सोया हुवा दिल का नजराना जगता है
ओऽऽऽऽ घोड़ी के संग सखियां नांचै
नचने का क्या कहना ठुमक - २....

बन्ने का जीजाजी घोड़ी निहारे
प्यारी सी बहिने भी नजर उतारें
ओऽऽऽऽ वारी फेरी करै लुटावै
लुटने का क्या कहना ठुमक -२...

मंदिर से सब आयके, मित्र घर दियो मुकाम ।
आयेगा बनड़ा-बहु घर में, गठ जोड़े को थाम ।।९।।

रथ घोड़े और बगिया, सज धज सभी उमंग ।
जिस वाहंन के लायक जो, बैठे आदर संग ।।१०।।

पितृ देव गणपती मनाय, चलि बारात उत्साव ।
भाव शरीर से सभी चलो, श्री सावा के गांव ।।११।।

उहाँ फतेहपुर में खुशी, बैठाया शुभ बान ।
हल्दीगीत लुगायां गावै, आवै मधुरी तान ।।१२।।

हल्दी गीत

हल्दी को रंग सुरंग निपजै मालवेजी
कंचन वरणी केशरीजी, आये बहुत सुगंध निपजे...
या हल्दी विनायक जी मुलाई, रिद्धि सिद्धि के मन फोड-निपजे...
या हल्दी सब देव मुलाई, सगली देव्या के मन कोड-निपजे...
या हल्दी थारा ताऊजी मुलाई, ताईजी के मन कोड-निपजे...
या हल्दी थारा बापूजी मुलाई, मायड़ के मन कोड-निपजे...

तेलबान की रश्म हुई, कांगन डोरी बंधाय ।
बान कढ़ाया ताई चाची, घर में खुशी मनाय ।।१३।।

पारस को बैठा दई, मामो गोद लिवाय ।
बनड़ी गावै साथिया, स्वर संग साज सजाय ।।१४।।

बाई नै बनड़ी बणावां पारसनै सजावां ।
आवो आवो ए सहल्यो आपा चाँव से ।।

शीश रखड़ी पहनावां सोने की मांग सजी जद फीणी गमकी
लाल बिंदिया लगावां सांचा मोती सजावां - आवो आवो...
भोंवा भोडल सु चमकाई मोद भरयो अखियाँ उभरयाई
नैणां काजलिया रमावां काना झुमका पहनावां, आवो आवो...
नाँक सूवैसी मै नथली घाली चाँव चढी होठारी लाली
कपोल लुभावाँ लाली जोत जगावाँ, आवो आवो...
नौलख हार गले बिच सौहे बाजुबंद चूडलै नै मोहै
तागड़ी तो बंधावा बींटी नाम की पहनावां, आवो आवो...
हाथ सज्या हथफूल सुहावै नूवांरी लाली नै झाला देवै
सिणगार सजावाँ सागै बनड़ी भी गावां, आवो आवो...
गौरे पगल्यां में पायल पहनाई अंगुलिया मै बिछिया सजाई
रुण झुण घुंघरू बजावां मंगल गीत सुनावां, आवो आवो...

आई बारात फतेहपुर मे, पारस का जहं ब्याव ।
नाई जाकर दई बधाई, सुनकर बढा उछाव ।।१५।।

जनवासे को आगये, समधी ले सत्कार ।
दोनो पक्ष मगन हुए, पग पग पर मनुहार ।।१६।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
समधी हु समधी गले मिले है । मनके आंगन फूल खिले है ।।
मंगसिर बदि सप्तमी पावन । सूर्योदय का समय सुहावन ।।
सबके मन मे खुशी समाई । हुई ईक्कठी सभी लुगाई ।।
डेरा निरखन हुई रवाना । संगले गीतों का नजराना ।।

गुल बनड़े की सुरत निहारी । हुई प्रशंन सुहागन नारी ।।
जनवासे ते सब घर आये । भत्ती भात चूनड़ी लायें ।।
भात भरण की बेला आई । कोयल कंठ लुगायां गाई ।।

गीत भात लेना का

बागां मैं बाज्या जंगी ढोल शहरा मै बाजा बजिया जी
आयो मेरी मां को जायो बीर चुनड़ ल्यायो रीझकी जी
मेलूँ तो डाबी भर ज्याय तोलू तो तोला तीसकी जी
नापूं तो हाथ पचास परखू तो विश्वा वीसकी जी
ओढूँ तो शहर सराये साजन आवै मुलकत जी
धन है गौरी थारो भाग बीरोजी ल्यायो चूनड़ी जी

चांक पूच लिया चाँव से, मंगल घट थरपाय ।
कोरथ देकर आगये, सब पुलकित हरसाय ।।१७।।

जनवासे हू सज चले, दूल्हा और बारात ।
घोड़ी नांचै पंछी चहके, धानुका धन बरसात ।।१८।।

होनहार बिरवान के, होत चीकने पात ।
होनहार ने क्या किया, आगे सुनिये बात ।।१९।।

सावा के घर में मंगल, और मंगल ससुराल ।
तृतीय स्कंध पुरा हुआ, आगे का लख हाल ।।२०।।

–: इति तृतीय स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है ।
श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेरो है ।।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: चतुर्थ स्कंध :

सतीत्वं सतीरूपास्त्वं त्वमेव दुःख हारिणी ।
तारिणी दुर्ग संसारः ज्योति रूपा नमोऽस्तुते ।।

: भाषा टीका :

हे सावा शक्ति दादी आप ही शक्ति हो सती रुप हो
अपने भक्तो के सब प्रकार के दुःखो को हरने वाली हो
संसाररूपी सागर से तारनेवाली हो आपही ज्योति पूंज हो
हम सब आपको नमस्कार करते है ।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
आनंद दोना पक्ष मनाया । होनी अपना जाल बिछाया ।।
बींद बराती अति प्रशंन है । सकल काफिला राजी मन है ।।
डाकू निकट गांव का आया । संग मे अपनी टोली लाया ।।
दूल्हा और बरात को देखा । विधि प्रेरित कर्मो का लेखा ।।
धन दौलत वो बहुत निहारी । डाकू दल की मति बिसारी ।।
छीन लिये गहने बरात के । कंठाभूषण और हाथ के ।।
दूल्हे का श्रृंगार लुभाया । डाकूदल लालच मे आया ।।

जब दुल्हे की और बढे, डाकू सब मिल साथ ।
सकल बराती जोश भरे, है एतिहासिक बात ।।१।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
उठा लिये अपने हथियार । बरछी भाले और तलवार ।।
दूल्हा बरातियों की सेना । लड़े लड़ाई क्या ही कहना ।।
चमक रही तिरछी तलवारे । मारो काटो सभी उचारे ।।
डाकू उतर अश्व के नींचे । क्रोधित होंय जबाड़ी भींचें ।।
दूल्हे को जब पकड़ लिया है । पीछे से आ जकड़ लिया है ।
कीन्हे एक साथ सब वार । भाला हुवा कलेजे पार ।।
दूल्हा बड़ी शान से सह गया । वीर गती को वीर पागया ।।

वांशल गोत्री धानुका, वीर का हो गया अंत ।
माया ये जिसने रची, वो है बड़ा अनंत ।।२।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
घटना के दर्शक कुछ आये । सावा के घर खबर कराये ।।
समाचार अनहोनी का सुन । सन्नाटा छाया बदली धून ।।
स्वयं सम्भल पाया नही कोई । सावा की मां आँख भिगोई ।।
परिजन पुरजन रहे निहार । सबही के मन दुःख अपार ।।
सावा अपनी मां से कहती । सतिनारी पति के संग रहती ।।
जन्म जन्म का साथी मेरा । हे माता दामाद वो तेरा ।।
सति होवूंगी उनके संग । पारस परमेश्वर के रंग ।।

रोम रोम मे सावा के, शक्ति गई समाय ।
सावा दुल्हन बनी हुई, पास पती के जाय ।।३।।

निवेदन का गीत

मतजा मतजा सुण पारस सुरज्ञान
तु सावा चढ़ेड़ी है मतजा ए कहणो मान

चढ़गा चढ़गा ईबतो तेल बान
कोई काँगन डोरी भी बंधी है तेरे हाथ

उजड़यो उजड़यो पारस तेरो सुहाग
धाड़ेती बैरी लेय लिया ए बांका प्राण

पारस कहे माँ पति परमेश्वर होय
म्हे जास्यां उनके साथ मतरोको मेरी मात

रोम रोम में शक्ति गई समाय
पारस इब रोकी ना रूकै ए "मंगल" मान

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सावा दृष्य देख मनलाई । पति परमेश्वर के सन आई ।।
दिखा है भाला सिने में जब । ज्योति नही नगीने में अब ।।
पति को गोदी बीच सुलाया । मस्तक को अंतिम सहलाया ।।
दुःख कलेजे में गहराया । पारस चँडी रुप बनाया ।।
सिंह को प्रगट किया जंगल में । हर हर महादेव मंगल में ।।
सावा चढी सिंह के ऊपर । साजन की तलवार लई कर ।।
सावा ने तलवार चलाई । डाकू दल सारा घबराई ।।

ज्यो दामिनि की चपलगति, त्यो चल रही तलवार ।
सावा शक्ति लड़ रही, रणचण्डी अवतार ।।४।।

तड़ तड़ तड़ित गति से तीक्ष्ण किये प्रहार ।
कड़ कड़ कड़के विधुतसम, मारे दृष्ट हजार ।।५।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
उग्र हुई है बनकर ज्वाला । दुष्टों को तमाम कर डाला ।।
मुण्ड विहिनम झुण्ड बिछाया । रण चण्डी बन शोर्य दिखाया ।।
सावा मां अति रक्त रंजित । सजी सिंह पे लगे सुशोभित ।।
चहूँ ओर सन्नाटा छाया । डाकू दल मुखिया चकराया ।।
मुखिया दोनों जोड़े हाथा । चरणों में घर दीन्हा माथा ।।
होनी को पहिचान लिया है । पारस उसको माफ किया है ।।
फिर सबको आदेश दिया है । निज कुल में सन्देश दिया है ।।

चन्दन लकड़ी लाईये, चित्ता करो तैयार ।
निज सुहाग के साथ मे, जाना परली पार ।।६।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
श्री सावा गई पति समीप । जगा हृदय मे सत्का दीप ।।
मुख मण्डल पर तेज सुहाना । अन्तर प्रेरित पति संगजाना ।।
इन्द्र देवता जल बरसाई । पारस पति को स्नान कराई ।।
गांव नगर में चर्चा होगी । गृहस्थी भी आये अरू जोगी ।।
जो हाजर वो फर्ज निभाया । चन्दन लकड़ी श्रीफल लाया ।।
वहां काफिला जुट गया भारी । चिता सजाई पूर्ण तैयारी ।।
पूजा अग्नि रथ की कीन्ही । शिव गोरी ने साक्षी दीन्ही ।।

सात लगाई परिक्रमा, सुद्ध बुद्ध दीन्ही खोय ।
मन की चाही ना होवै, हरि इच्छा सब होय ।।७।।

अग्नि रथ पर बैठकर, ले पति काया गोद ।
सुख दुःख सारे मोन हुए, हुवा ब्रह्म का बोध ।।८।।

स्वतः होगया गठ जोड़ा, नहीं लगाया हाथ ।
हाथ जोड़ पारस बोली, सूर्य देव देवो साथ ।।९।।

सूरज से प्रगटी किरणे, लगी चिता मे आग ।
पंच तत्व पावन हुए, फैला पून्य पराग ।।१०।।

सिन्दुरी रंग की उठी, लपटें लाखो लाख ।
आये सारे देवता, भरने उनकी साख ।।११।।

उसी समय सबने देखा, चमत्कार साकार ।
सावा देवी के कुचन से, बही दूध की धार ।।१२।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सवंत था सोलह सो सत्तर । मंगसिर बदि अष्टमी बेहतर ।।
दोनो कुल को धन्य किया है । सावा अग्नि स्नान किया है ।।
छः बजकर एक मिनट सुहाई । परम दिव्य ज्योति प्रगटाई ।।
सकल देवता नभ में छायें । होय प्रशंन पुष्प बरसाये ।।
कोई शोक नही करना भाई । सावा ने आशिष सुनाई ।।
फलो फूलो ज्यू वंश भानुका । पीहर और ससुराल धानुका ।।
अनधन लक्ष्मी घर मे आसी । दिग्पाली दुःख दूर भगासी ।।
सावा सती नाम से म्हारी । पूज कर फल ले संसारी ।।

पारस देवी अग्निरथ पर, चढी फतेहपुर धाम ।
सावा नाम से कीर्ती कलश, सेवक करे प्रणाम ।।१३।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सब के उर आनंद सवाया । सुन्दर सा मंदिर बनवाया ।।
पश्चिम दिशि मे मुख्य द्वार है । पूर्व नागेश्वर शिव दरबार है ।।
शिवजी दुर्गा लक्ष्मी राजे । संकट मोचन वही विराजे ।।
प्राचिन मुख्य द्वार दक्षिण मे । राणीसती निहारे क्षण में ।।
श्रीराणी सति के मंदिर से । सावा का रस्ता अन्दर से ।।
पीतरजी अरू देवता बाबा । मंड के दाहिने उनकी आभा ।।
मंदिर मे एक नीम खड़ा है । सावा के सन हुवा बड़ा है ।।
गढ गुम्बज पे ध्वजा फहराई । विधि से पूजा पाठ कराई ।।
नित प्रति होवे वहां आरती । सब की किस्मत माँ सवारती ।।
आने जाने लगे जातरी । भक्तों के मन पूरी-खातरी ।।
जब जब भादो मावस आती । मेला भरत जगत जस गाती ।।
लक्ष्मीनाथ बाबा वहां राजे । नगर फतेहपुर मंदिर साजे ।।

श्रद्धा भाव सहित पढे, यह चोथा स्कंध ।
मनो कामना पूर्ण हो, कटे दुःखो का फंद ।।१४।।

-: इति चतुर्थ स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है ।
श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेरो है ।।

श्री सावा शक्ति मंगलपाठ

: पंचम स्कंध :

योगमाया योग रूपा शिवा भस्मी शुभंकरी
मंगला मंगली धारा रक्षा सुत्र प्रदायिनी

: भाषा टीका :

सावा शक्ति दादी योग माया है योगरूपा है
उसकी भस्मी कल्याण करने वाली है
उसका रक्षा सुत्र जो धारण करता है
उसके जीवन में सर्वदा मंगल होता है मंगल जलधारा से
उसका जीवन पवित्र होता है ।

किस्मत वाले होते है, जो मां की महिमा गाते है ।
लिखा नही जो किस्मत में वो, माँ से सब पाजाते है ।।१।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सति कि भस्मी शिव मन भाई । दक्ष यज्ञ मे सती समाई ।।
ये भस्मी संतन सिरधारी । सुखी हुए सारे संसारी ।।
बालक को दे यही भभूती । भूत पिशाचिनी नहीं सताती ।।

अपने घर में मैया की, रख्यो भस्मी संभाल ।
रोग शोक सब दूर करे, मैया करें निहाल ।।२।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
चरणामृत अमृत कर जान । माँ का जल है पून्य महान ।।
सर्वरोग नाशक जल मां का । माँ के जल की विमल पताका ।।
प्रातः काल जो यह जल पीवे । माता की ममता में जीवें ।।

जल की महिमा अमित है, कह गये वेद पुराण ।
सावा सति का जल लिये, निश्चय है कल्याण ।।३।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
राखी माता की बन्धवावे । कर्म बंधन से मुक्ति पावे ।।
जो बन्धवाया रक्षासूत्र । गोद खिलाया उसने पुत्र ।।
जब से रक्षा सूत्र चला है । हर प्राणी का हुआ भला है ।।

बलिराजा के महल मे, विष्णु पहरेदार ।
कारण रक्षा सूत्र के, हुवा विष्णु उद्धार ।।४।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
सावा का श्रृंगार सजावो । अपना जीवन सफल बनावों ।।
जो सावा को सदा संवारे । उसका जीवन मात संवारे ।।
फूलो का श्रृंगार सुहाना । लाल फूल को भूल न जाना ।।

अपने इन हाथो से कर, मैया का श्रृंगार ।
नयनों से तू दर्शन कर, मुख से जय जयकार ।।५।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
मां को चुनड़ी लाल उढावे । उसको सावा कवच पहनावे ।।
काल भी क्या सकता उसका । चुनड़ी मे मन बसता जिसका ।।
तार तार मे सत् का तप है । इसमें अग्नि धरा जल नभ है ।।
पंच तत्व की यह परछाई । इसकी महिमा वरणी न जाई ।।
जिसने इसकी महिमा जाणी । अमर हो गई उसकी वाणी ।।
चुनड़ी का रंग शक्ति सुरंगा । चुनड़ी यमुना चुनड़ी गंगा ।।

चुनड़ी बिन संसार का, सूना है श्रृंगार ।
जैसे ईश्वर प्रेम की, भक्ति है आधार ।।६।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
रोली मोली अक्षत लीजै । मेहन्दी से माता बहु रीझे ।।
दुर्वा सुमन सुगंधित लाय । धूप दीप नैवेद्य लगाय ।।
लवंग इलायची पान सुपारी । श्रद्धा भाव सहित है प्यारी ।।
चुड़ो बिन्दिया लाल चढावै । पुत्र पति की रक्षा पावै ।।
मन मे भाव रहे नही दूजा । करो नित्य माता की पूजा ।।

सर्व मंगला सावा माँ, नथ पहिने त्रिशूल ।
नयन मूंद कर देखिये, सजे सुहाने फूल ।।७।।

माँ सावा शक्ति सुखकारी । मंगल करत अमंगलहारी ।।
परम दिव्य सिंहासन तेरा । अटल छत्र भी छट्टा बिखेरा ।।
सूर्य चन्द्र बलिहारी जाये । चूनड़ कोटिक नखत सराहें ।।

भाल सुशोभित बिन्दिया नीकी । कबहु मेहन्दी पड़े ना फीकी ।।
माँ सावा शक्ति मन लाई । प्रेम सहित मंगल करवाई ।।
सदा दिवाली उसके रहती । जिस घर में सावा की ज्योति ।।
रोग दोष अघ शोक नसावे । सुत धन धान्य आयु सुख पावे ।।
प्रतिदिन या मावस को गावे । परम प्रसन्न सावा हो जावे ।।

सावा मंगल पाठ से, सुधरे सारे काम ।
तनकी सब व्याधा टरे, मन पाये विश्राम ।।८।।

सावा सती दादी मेरे, मनको मगन बणाय ।
भाव सुमन दिन्हे चढा, चरणों शीश नवाय ।।९।।

सदाशरण में राखियो, सावा मेरी माय ।
सेवक की सुन प्रार्थना, करियो नित्य सहाय ।।१०।।

जय जय जय श्री सावा शक्ति, मैया ज्योति स्वरूप ।
दुख हरणी मां सुखकरणी, रहो भक्त अनुरूप ।।११।।

मंगल महर माँ नित्य करो, दीजै भूल सुधार ।
सौम्य भाव से सावा मां, मेरी ओर निहार ।।१२।।

-: इति पंचम् स्कंध :-

गोविन्द मेरो है गोपाल मेरो है ।
श्री बांके बिहारी नन्दलाल मेरो है ।।

श्री सावा सती चालीसा

सद्गुरू चरण कमल नवू, पदरज चित्त मे धार ।
आँखो में माँ छवि बसा, मन दर्पन हु सुधार ।।

गणपति सरस्वती विष्णु, शिव ब्रह्मा धर ध्यान ।
माँ सावा की ज्योति का, करहु नित्य गुणगान ।।

जय माँ सावा शक्ति सुहावन। चरित तुम्हारा है अति पावन।।
परम पूज्यनिय मंगल दाता। भक्त वत्सला भाग्य विधाता।।
मात पिता की सुता सुजान। पारस परमेश्वरी महान।।
संकट विकट मोचनी माई। सब संताप विमोचनी माई।।
करूणा सागर कृपा निधान। रूप दिव्य है गुण की खान।।
शेखावाटी है बड़ भागी। मरूधर देश में ज्योति जागी।।
शिखर बंद सत बना सेवरा। बना फतेहपुर प्रमुख देवरा।।
सर्व मंगला माँ कल्याणी। धाम फतेहपुर आप धिराणी।।
तीन ताप अरू संकट हरणी। कष्ट निवारिणी मंगल करणी।।
सकल संपदा की तुम दाता। जय जय जय श्री सावा माता।।
सरस सौम्य माँ सुन्दरताई। कही न जाय मनोहर ताई।।
दुर्गा, दादी, अम्बा कहिये। चरण शरण कर जोड़े रहिये।।
तेजोमयी मात है ज्वाला। समरांगण में रूप निराला।।
रणचण्डी बन शोर्य दिखाया। डाकू दल का किया सफाया।।
सति सत से अग्नि प्रगटाई। सत्य लोककी चमक बढाई।।
जब जब भक्त पुकार लगाई। गगन देव दुंदुभी बजाई।।
भक्तन घर आभा छिटकाई। दास जनो की करें सहाई।।
सावा दादी बहुत उदार। सेवक जन की लख दातार।।
कलियुग के सब दोष नशावन। सावा शक्ति जन मन भावन।।

पारसदेवी जग विख्याता। जयति जयति सति दादी माता।।
परम दिव्य माँ मरूधरवाली। वंश धानुका तारणवाली।।
नयना काजल बिंदिया नीकी। कबहु मेहन्दी पडे न फीकी।।
नथ की आभा लगे सुप्यार। मुख मण्डल छायों उजियार।।
सत् की लाल चूनड़ी साजे। हस्त कमल त्रिशूल विराजे।।
सूर्य चन्द्र तारागण गाये। लाल चुनड़िया देव सराहे।।
सहज सुभग सुन्दर श्रृंगारा। रति मति पाये नही पारा।।
वंश धानुका किरती पाई। किया उजागर कुल को माई।।
अमर सुहागन माँ की ज्योती। पति परमेश्वर नथ का मोती।।
स्वस्तिक पूजन लाभ प्रदाता। जय जय हम बालक की माता।।
जो मैया के शरणे आये। सावा उनकी लाज बचाये।।
नित प्रशंता देवे माता। नाव अटकती खेवे माता।।
सावा चढ पारस नही ब्याई। एहिते सावा सती कहाई।।
अपने सेवक आप निहारे। बिन बोले सब काज सुधारे।।
है मुस्कान अमीरस धारा। तेज पूंज जाने संसारा।।
दुःख दुरमति माँ दूर भगावे। सुख, समृद्धि प्रतिष्ठा पावे।।
सावा सोया भाग जगावें। पारस सत् का संग करावें।।
कदम कदम पर माँ प्रतिपाल। भरे भण्डारा करे निहाल।।
मनसे करे जो पाठ चालिसा। घर में खुशिया ठाठ आलिसा।।
मनोकामना पूरनवारी। वर दो खुश होकर महतारी।।
नित नव 'मंगल' कर हितकरी। रहत धानुका शरण तिहारी ।।

दोहा

जय जय माँ सावा सती, सदा आनंद स्वरूप ।
भक्तो पर माँ कृपा करो, बालकहित अनुरूप ।।

।। श्री हनूमते नमः ।।

श्री हनुमान चालीसा

: दोहा :

श्री गुरू चरन सरोज रज निज मनु मुकुरू सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो जायकु फल चारि ।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।
राम दुत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पनवसुत नामा ।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लषन सीता मन बसिया ।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सँवारे ।।
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकरा सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना । लंकेश्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डर ना ।।

।। श्री हनूमते नमः ।।

श्री हनुमान चालीसा

आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपैं ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो काइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा । जै सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरू देव की नाईं ।।
जो सत बार पाठ कर कोईं । छूटहि बंदि महा सुख होईं ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

: दोहा :

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।

श्री सावा शक्ति माता की आरती

जय सावा शक्ति मैया जय सावा माता
सेवक जन प्रतिपाली सुख समृद्धि दाता ।।

धाम फतेहपुर तेरा अति पावन प्यारा
दर्शन कर जन मन में बहती सुखधारा ।।

छवि त्रिशुल नथ सोहे स्वस्तिक तव पूजा
चमके चुनर सत् से भाव नहीं दूजा ।।

शुभ सुहाग सामग्री माँ तेरे भेंट धरे
चुड़ो बिदिंया महेन्दी जय जयकार करें ।।

मंदिर में नागेश्वर शिव महादेव सती
लक्ष्मी, संकट मोचन श्री हनुमान जती ।।

वैश्य, धानुका वंश में कृपा करी दाता
बांसल गोत्र उजागर धन्य पिता माता ।।

पारस सावा चढकर शक्ति रूप लिया
सति लोक मे सावा सत् सरनाम किया ।।

अनधन वंश बढावे सुख भण्डार भरे
भक्तो पर मां सावा निश्चय कृपा करे ।।

सावा शक्ति की आरती जो कोई गाता
दर्शन कर मैया से मंगल वर पाता ।।

श्री हनुमान जी की नई चमत्कारी आरती

ॐ जय हनुमान हरे प्रभु जय हनुमान हरे सब भक्तों के हनुमत पूरण काम करे
ध्यावत ही फल पावत संकट दूर करें धर्म मोक्ष अरू वैभव सुख भरपुर करें
लाल सुरज मुख लिन्हो लाल लाल लंगरे लाल ध्वजा अरू घोटा हस्तकमल विचरे
अष्ट सिद्धीयां देवत नव निधि प्रदत करें राम भक्त कहलायें संतन सहाय करें
सीता की सुधि लाये धक् धक् लंक जरे मुर्छित हो गये लक्ष्मण उनके कष्ट हरे
देवी विग्रह समाये अहिरावण उखरे राम लखन जग लाये राम राम उचरे
श्री हनुमानजी की आरती भाव सहित उच्चरे मंगल मुर्ति हनुमत अनुग्रह सब सुधरे

श्री हनुमान जी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की दृष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।
जांके बल से गिरवर कांपे, रोग दोष जांके निकट न झांके ।।
अंजनि पुत्र महा बलदायी, सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुध लाये ।।
लंका-सो कोट समुद्र-सी खाई, जात पवनसुत वार न लाई ।।
लंका जारि असुर सब मारे, सियाराम जी के काज संवारे ।।
लक्ष्मण मूर्छित पडे सकारे, आन संजीवन प्राण उबारे ।।
पैठी पाताल तोरि यम कारे, अहिरावण की भुजा उखाडे ।।
बाँये भुजा असुर दल मारे, दाहिनी भुजा संत जन तारे ।।
सुर-नर मुनिजन आरती उतारे, जय जय जय हनुमान उचारे ।।
कंचन थाल कपूर लौ छाई, आरती करत अन्जनी मांई ।।
जो हनुमान जी की आरती गावै, बसि बकुण्ठ परम पद पावै ।।
लंका विध्वंस किये रघुराई, तुलसीदास स्वामी कीर्ती गाई ।।
आरती किजै हनुमान लला की, दृष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।

पुष्पांजली

मरूधर राजस्थान को, कण कण गावै नाम ।
मनस्या पूरो मावड़ी, जय जय जय सुखधाम ।।

श्रद्धा भाव सहित आयो, माई करो निहाल ।
पग-पग पर रक्षा करो, भग्तां की प्रतिपाल ।।

सेवक की सुन प्रार्थना, नाव पड़ी मझधार ।
दुःख सागर से पार कर, मैया खेवन हार ।।

ज्यादा कछु मांगु नहीं, मांगु यह वरदान ।
मेरे छोटे से परिवार का, रखियो पुरा ध्यान ।।

कृपा दृष्टि माता रखना, हरदम रहना साथ ।
अपने सेवक के सदा, रखियो सिर पर हाथ ।।

मंगल महर माँ नित्य करो, दीजे भूल सुधार ।
सहज भाव से माँ सावा, मेरी और निहार ।।

रोग दोष दुःख दरिद्रता, सारा कष्ट कलेश ।
मेरी सब व्याधा हरो, करियो कृपा हमेश ।।

शरणागत हूँ राखियों, निज आँचल की छांह ।
आनंद मंगल कारिणी, गहियों मेरी बांह ।।

सुमन सुगंधित सुमन ले, सुमन शुभक्ति सुजान ।
पुष्पांजलि अर्पण करूं, मां सावा करो स्विकार ।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव ।।

यानी कानि च पापानी, ज्ञाता ज्ञात कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति, प्रदक्षिणा पदे पदे ।।

ज्योत का भजन

जग मग ज्योति जलै है मैया जगमग ज्योति जलै
सावा सती कै मंदरीये मे जगमग ज्योति जलै।।
मैया रक्षा करणा, सबके संकट हरणा
सबको देने पर बचे तो मेरी भी झोली भरणा
मैया रक्षा करणा, सबके संकट हरणा.....

धाम फतेहपुर मंदिर थारो, महिमा ज्यांकि न्यारी
शेखावाटी पावन भूमि, सतियां को सत भारी
लाखां ही नर नारी आवे, ले तेरा शरणां
मैया रक्षा करणा.....

सूरज सामी बण्यो देवरो, जगमग-2 ज्योति
मैया की नथली मे चमके, हीरा माणक मोती
छप्पन भोग लगै है थारे, श्री फलका झरणा।।
मैया रक्षा करणा.....

अंधा पावै आँख आपसे, निर्धनिया धन पावै
लंगड़ा ने माँ बख्स दिया पग, दौड़या दौड़या आवै
उत्सव मै आणा को मतलब, वेतरणी - तरणा
मैया रक्षा करणा.....

म्हेतो थारा टाबरीया हां, थारा ही गुण गावा
ऐसी महर करो म्हाँरे पर, उत्सव रोज मनावां
श्री धानुका सावा शक्ति प्रचार समिति मुंबई, का मंगल करणा
मैया रक्षा करणा.....

त्रिशुल का भजन

चमक रहयो त्रिशुल म्हारी दादीजी को आज,
म्हारी मैयाजी को आज
थारी ही शक्ति है माता जगदंबा

जगदंबा जग तारिणी सावासती मेरी मात
भूल चूक सब माफ करो रखियो सिर पर हाथ
शिवशंकर के हाथ में है मैया यो ही त्रिशुल, मैया यो ही त्रिशुल
पार्वती को रूप माता जगदंबा । चमक रह्यो...

फतेहपुरवाली माँ थारो धरू ध्यान हर रोज
जिस दिन से सुमिरन करुं मेरे रहे अखाड़े मौज
प्रगट हो जाओ त्रिशुल में, म्हारी मैयाजी थे आज 2
निज भक्तां रे काज माता जगदंबा । चमक रह्यो...

जय जय श्री जगदंबिके शप्त पुंज आधार
चरण कमलधर ध्यान में सुमरू बारंबार
बार बार बिनती करू मैया आओ म्हारे द्वार 2
म्हाने थारो ही आधार माता जगदंबा । चमक रह्यो...

चंद्र तपै सुरज तपै उदगण तपै आकाश
इन सबसे बढ़कर तपै सतियों का सुप्रकाश
ज्योति के प्रकाश में थानै देखां बारंबार 2
थारी लीला अपरंपार माता जगदंबा । चमक रह्यो...

सेवा पूजा बंदगी सभी तुम्हारे हाथ
मैं तो कुछ जांणू नहीं थे जाणो मेरी मात
श्री धानुका सावा शक्ति प्रचार समिति मुंबई, करै थारा गुणगान 2
म्हारो मंगल करीयो काज माता जगदंबा । चमक रह्यो...

मेरी मैया मेरे घर आई, मैं तो झुम-झुम बाटूँ बधाई।।

कभी देखूँ इधर कभी देखूँ उधर, मेरी आँखे खुशी से भर आई...मैं तो
ओढ़े चुनड़ियाँ लाल छाया तेज बेशुमार, होके सिंह सवार मैया आई...मैं तो
ढ़ोल बजने लगे झांझ बजने लगी, बाजी बाजी मंगल शहनाई...मैं तो
धुप ढ़लने लगी छाँव होने लगी, ठंडी ठंडी चली पुरवाई...मैं तो
आज पुरे हुए दिल के अरमान सब, माँ को बेटे की याद तो आई...मैं तो

सरब सुहागण मिल मन्दरिये में आई, दादीजी के हाथ रचाई जी या मेंहदी।

सोने की झारी मे गंगाजल ल्याई, तो कंजन थाल घुलाई जी या मेंहदी।
चाँदी की चौकी पर चोक पुरायो, तो दादीजी बैठ मण्डाई जी या मेंहदी।
लाल सुरंगी मेंहदी हाथां रची है, तो दादीजी ने बहुत ही प्यारी जी या मेंहदी।
चरण धोय चरणा में लागी, तो आशीष लेकर आई जी या मेंहदी।
अन्न धन लक्ष्मी बहुत घणा दे, म्हारै टाबरियाकी बेल बढ़ाई जी दादीजी।
दया दृष्टि कर द्यो दादीजी, थारा टाबरिया मिल गाई जी या मेंहदी।

दादी ओढ़ले टाबरिया थारी चूनड ल्याया ए, चूनड़ ल्याया चूड़ो ल्याया चूनड़ ल्याया ए.. दादी

कोई तो ल्याव ए मैया हीरे री नथली, म्हे टाबरिया घणी राचणी मेंहदी ल्याया ए.. दादी
कोई तो ल्याव ए मैया सोने रो छत्तर, म्हे टाबरिया लाला सुरंगी रोली ल्याया ए.. दादी
कोई तो चिनाव ए थारो मन्दिर देवरो, म्हे टाबरिया सवा रूपयो भेंट में ल्याया ए.. दादी
कोई तो बैठाव ए थान स्वर्ण सिंहासन, बनवारी तो मात समझकर दिल मं बैठाया ए.. दादी

मैया नाचण दे तेरा भगता न, थारो गजब हुयो सिणगार मैय नाचण दे...
बिन घुंघरू क नाचा मैया कराँ तेरी जयकार... मैया नाचण दे...

खुब सज्यो सिणगार हे मैया बस देख्या ही जावां जी, इतना बढ़िया -२ गजरा देख्या पहली बार...
एसो कुण सो फुल है मैया जो गजरा म ना लाग्यो, इतनी बढ़िया खुश्बु मैया महक उठयो दरबार...
इतनी शक्ति दे दे मैया कुद-२ कर नाचा जी, सावन भादो जइया बरस मैया थारो प्यार...
नाच न आव आंगण टेढ़ो सारी दुनिया बोल जी, बनवारी तु इतनो नचा दे चुप हो जा संसार...

मेहंदी का गीत

मेहंदी रची थारै हाथां मैं, घुल रह्यो कालज आँख्या में
चुनड़ी को रंग सुरंग, माँ सावा सती ।।
फुल खिल्यो थारा बागाँ में, चाँद उग्यगो हे राताँ में।
थारो इसो सुहाणो रूप माँ, सावा सती।।

रूप सुहाणो जद से देख्यो, नींदडली नहीं आँख्या में।
म्हारे मन पै जादु करग्यो, थारी मीठी बाता नै ।।
याद करूं थारै नामाँ नै, भूल गयो सब कामां नै ।
माया को छुट्यो फँद, माँ सावा सती ।। मेंहदी।।

थे कहो तो दादी थारी, नथली बन जाऊं मैं।
नथली बन जाऊं थारे, होठा से लग जाऊं मैं।।
चुड़ो बनू थारै हाथा मे, बोर बनू थारा माथा में।
बन जाऊं बाजु बन्ध - माँ सावा सती ।।

थे कहो तो दादी थारी, पायलड़ी बन जाऊं मैं।।
पायलड़ी बन जाऊं थारै, चरणो में रम जाऊं मैं।।
हार बनू थारे गले म, मोती बनू थारे झूमके म ।
नैना में करल्यू बन्द, माँ सावा सती ।।

जैसा चाहो मुझको समझना, बस तुमसे है माँ इतना कहना
माँगने की आदत जाती नहीं, तेरे आगे लाज मुझे आती नहीं

बड़े-बड़े पैसेवाले भी तेरे दरपे आते है,
मुझको है मालुम कि वो भी तुमसे माँग के खाते है
तुम से मांगने में इज्जत जाती नहीं, तेरे आगे लाज मुझे आती नहीं

तुमसे मइया शरम करुँ तो और कहाँ मैं जाऊंगा,
अपने इस परिवार का खर्चा और कहाँ से लाऊंगा
दुनिया तो बिगड़ी बनाती नहीं, तेरे आगे लाज मुझे आती नहीं

तू ही करती मेरी चिन्ता तो ही गुजारा चलता है,
कहे पनव की तुमसे ज्यादा कोई नहीं कर सकता है
झोली हर कहीं फैलायी जाती नहीं, तेरे आगे लाज मुझे आती नहीं

देना होत तो दीजिये, जनम जनम का साथ
मेरे सर पर रख दे मईया, अपने ये दोनो हाथ।।

देने वाली मईया हो तो, धन और दौलत क्या मांगे
साथ अगर मईया का हो तो, नाम और इज्जत क्या मांगे
मेरे जीवन में तू करदे-२ माँ किरपा की बरसता।।

माँ तेरे चरणों की धूली, धन दौलत से मंहगी है
एक नजर किरपा की मईया, नाम इज्जत से महंगी है
मेरे दिल की तमन्ना यही है-२ माँ रखले मेरी बात।।

इस जन्म मे सेवा देकर, बहुत बड़ा एहसान किया
तू ही दूर्गा तू ही काली, हमने तुम्हे पहचान लिया
हर जन्मों में सेवा दोगी-२, ये मांगे आशिर्वाद।।

सुना है हमने शरणागत को, अपने गले लगाती हो
ऐसा हनमे क्या मांगा जो देने में सकुचाती हो
चाहे जैसा रख बनवारी बस होती रहे मुलाकात।।

मोटी सेठाणी, म्हारो बेड़ो पार लगाणों पड़सी ए, मोटी सेठाणी ।
पीछो तेरो छोढूँ कोन्या, क्या मँ बड़सी ए, मोटी सेठाणी...।।

सूंप देई पतवार मात म्हे, थारै भरोसै बेठया ए।
नींदड़ली तोड़ो कुल देवी, आणो पड़सी ए....।।१।।

थानै अपनो जान के मैया, थारो पल्लो पकडयो ए।
माँ बेटा को रिस्तो थानै, निभाणौ पड़सी ए....।।२।।

म्हे थारो पल्लो छोड़ा कोन्यां, चाहे कुछ भी करले ए।
टाबर तांई हाथ दया को, बढ़ाणो पड़सी ए....।।३।।

टाबर की अर्जी पर मैया, कांई थारी मर्जी ए।
बनवारी माँ आज फैसलो, सुनाणो पड़सी ए....।।४।।

दादी दादी बोल दादी सुण लेसी, सुण लेसी दादी सुण लेसी।
मैया-मैया बोल माँ सुण लेसी, सुण लेसी माँ सुण लेसी।
हाथ में जो भी काम हो, पर मुख में दादी का नाम हो । दादी-२।

दादी नाम की महिमा है अपार, जो ले लेवे हो जावे भव पार।
मातेश्वरी, बण सी तेरी,
चाहे मेहनत या आराम हो, पर मुख में दादी का नाम हो । दादी-२।

फतेहपुरवाली माँ है बड़ी दातार, भर देवे पल में, तेरा भण्डार।
माँ हर घड़ी, हाजिर खड़ी,
चाहे सुबह हो या शाम हो, पर मुख में दादी का नाम हो । दादी-२।

बोलन दै जो बोल यो संसार, करले मनवां, श्री चरणां से प्यार।
सुधबुध भुला, दादी न ध्याय
मेरो मन दादी को धाम हो, और मुख में दादी का नाम हो । दादी-२।।

संकट हरणी, मंगल करणी, करियो बेड़ा पार, भरोसो भारी है भरोसो भारी है
भारी है माँ भारी है, थारो भरोसो भारी है
जय जगदम्बे, फतेहपुरवाली, दुर्गा की अवतार, भरोसो भारी है
लक्ष्मी, शारदा, काली तू, अरि को मर्दन वाली तू
भक्तों की प्रतिपाली तू, मात फतेहपुरवाली तू
कर रक्षा बालक तेरां की, होकर सिंह सवार, भरोसो भारी है
बीच भंवर में नाव पड़ी, थां बिन दादी कौन धणी
सेवा मैया नाय बणी, करणी पड़सी दया घणी
छोड़ तनै मैं जाऊँ कईयां, दीखे न दूजो, द्वार भरोसो भारी है
जिसे न माँ का प्यार मिला, फूल कभी वो नहीं खिला
माँ की ममता होती क्या, कवियों से ना गायी जा
जन्म लियो पर मिल्यो नहीं मनै, माँ को सच्चो प्यार, भरोसो भारी है
भव सागर को पर नहीं, नैया को पतवार नहीं
क्यूँ सुनती करूण पुकार नहीं, तुम बिन माँ आधार नहीं
बालक पर भी कर दो दया माँ, एक बार पलक उघाड़, भरोसो भारी है

झिलमिल - झिलमिल चूनड़ी में तारा चमके, आजा ए भवानी तेरा सेवक तरसै
सेवक तरसै ए मैया बालक तरसै ।।आजा ए...

लाल सुंरगी मेंहदी थारे, हथेल्यां राचै लाल, धाम है तेरो फतेहपुर मैया, मन्दिर बनो विशाल
सिंह पर बैठ्या दादीजी न, सेवक निरखै... आजा ए...

हाथां सोवे लाल चूड़ो माँ गल बिच नौसर हार लाल कसूमल कब्जो सोहे, लम्पो की बहार
काना माँहीं झूमको, माँके, मोती चमके... आजा ए...

माथे सोह बोरलो नैणा काजलियां री रेख पलकां तो उघाड़ो मैया, टाबरिया न देख
कद से खंडाया पुकारां, थारा सेवक निरखै... आज ए...

पग पैजनियाँ कमर तागड़ी, सिर पर चँवर ढुले जग मग थारी ज्योति जगे माँ छप्पन भोग लगे,
देख देख थारो रूप सुहानो, मनड़ो हरषै... आजा ए...

लाल ध्वजा फहरै मन्दिर पे, नौबत बाजै द्वार रत्न सिंहासन बैठी मैया, तीन लोक सरकार
भक्त करै गुणगान गगन से अमृत बरसे... आजा ए...

गुरूदेव दया करके, मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना ।।गुरूदेव।।

करूणानिधि नाम तेरा, करूणा दिखलाओ तुम।
सोये हुए भक्तों को, हे नाथ जगाओ तुम।
मेरी नाव भंवर डोले, उसे पार लगा देना ।।गुरूदेव।।

तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो।
इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो।
नित माला जपुं तेरी, नहीं दिल से भुला देना ।।गुरूदेव।।

पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ।
घरबार छोड़ कर मैं, जीवन से खेला हूँ।
दुःख का मारा हूँ मैं, मेरे दुःख़ड़े मिटा देना ।।गुरूदेव।।

मैं सबका सेवक हूँ, तेरे चरणों का चेला हूँ।
नहीं नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हूँ।
तेरे दर का भिखारी हूँ मेरे दोष मिटा देना ।।गुरूदेव।।

माता पिता गुरू प्रभु चरणों में प्रणवत बारम्बार-१

हम पर किया बड़ा उपकार, हम पर किया बड़ा उपकार ।।टेर।।
माता ने जो कष्ट उठाया, वह ऋण कभी ना जाये चुकाया,
अंगुली पकड़ कर चलना सिखाया, ममता की दी शीतल छाया,
उनकी गोदी में पलकर हम, बनें बढें हुशियार...
पिता ने हमको योग्य बनाया, कमा कमाकर अन्न खिलाया,
पढ़ा लिखा गुणवान बनाया, जीवन पथ पर चलना सिखाया,
जोड-जोड़ अपनी सम्पत्ति का, बना दिया हकदार...
तत्व ज्ञान गुरू ने दर्शाया, अन्धकार सब दूर हटाया,
हृदय में भक्ति दीप जलाकर हरि दर्शन का मार्ग बताया,
बिना स्वार्थ ही कृपा करें वो कितने बड़े उद्धार...
प्रभु कृपा से नर तन पाया, संत मिलन का साज सजाया,
बल बुद्धि और विद्या देकर, सब जीवों में श्रेष्ठ बनाया,
जो भी इनकी शरण में आता, कर देते उद्धार...

राधिका गोरी से बृज की छोरी से, मैया करादे मेरो ब्याह ।।टेर।।

जो नहीं ब्याह करावे, तेरी गैय्या नहीं चराऊं,
आजके बाद मोरी मैया, तेरी दहेली पर ना आऊँ,
आयेगा रे मजा-२, अब जीत हार का ।। १ ।।

चन्दन की चौकी पर, मैया तुझको बेठाऊ,
अपनी राधिका से मैं, मैया चरण तेरे दबवाऊं,
भोजन में बनवाऊगा छप्पन प्रकार के ।। २ ।।

छोटी सी दुल्हनिया, जब अंगना में डोलेगी,
तेरे आगे मैया वो घूंघट ना खोलेगी,
दाऊ से जा कहो, जा कहो, बैठंगे द्वार पे ।। ३ । ।

सुन बाते लाला की, मैया बैठी मुस्काये,
लेकर बलैया मैया, हिबडे से उसे लगाये,
नजर कहीं ना लगे, ना लगे मेरे लाल को ।। ४ ।।

मीठे रस से भरो री राधा रानी लागे राधा रानी लागे
मने कारो कारो जमनाजी रो पानी लागे

जमनाजी तो कारी कारी, राधा गोरी गोरी,
वृन्दावन में धूम मचावे बरसाने की छोरी
ब्रजधाम राधाजी की रजधानी लागे रजधानी लागे...

कान्हा नित मुरली में टेरे, सुमिरै बारंबार
कोटिन्ह रूप धरै मनमोहन, कोउ न पावै पार
रूप रंग की छवीली पटरानी लागे पटरानी लागे...

ना भावे मने माखन सिसरी, अब ना कोई मिठाई
म्हारी जीभडिया ने भावे अब तो राधा नाम मलाई
वृषभान की लली तो गुडधानी लागे...

राधा राधा नाम रटतहै जै नर आठो याम,
तिन की बाधा, दूर करत है राधा राधा नाम
राधा नाम में सफल जिंदगानी लागै जिंदगानी लागे...

तूं कितनी अच्छी है, तूं कितनी भोली है, प्यारी-प्यारी है... ओ माँऽऽऽ
ये जो दुनिया है - ये वन है कांटो का - तू फुलवारी है... ओ माँऽऽऽ
दूखन लागी है मां तेरी अखियां-२ मेरे लिए जागी है तूं सारी सारी रतिया
मेरी निन्दियां पे अपनी निन्दियां भी तूनें वारी है... ओ माँऽऽऽ
अपना नहीं तुझै सुख दुख कोई-२ मैं मुस्काया-तूं मुस्कायी - मैं रोया तूं रोई
मेरे हंसने पे - मेरे रोने पे - तूं बलिहारी है... ओ माँऽऽऽ
माँ बच्चों की जां होती है-२ वो होते हैं किस्मत वाले - जिनकी माँ होती है
तूं कितनी सुन्दर है - तूं कितनी शीतल है - तूं न्यारी न्यारी है... ओ माँऽऽऽ

तूने मुझे बुलाया शेरांवाली ए, मै आया मैं आया शेरांवाली ए।
ओ ज्योतांवाली ए, पहाडांवाली ए, ओ मेहरांवाली ए ।।
सारा जग है इक बंजारा, सबकी मंजिल तेरा द्वारा
ऊँचे पर्वत लम्बा रस्ता-२ पर मैं रह ना पाया शेरांवाली ए ।।
सूने मन में जल गई बाती, तेरे पथ पर मिल गये साथी,
मुँह खोलूँ क्या तुझसे माँगू-२ बिन माँगे सब पाया शेरांवाली ए ।।
कौन है राजा कौन भिखारी, एक बराबर तेरे सारे पुजारी,
तूने सबको दर्शन देके-२ अपने गले लगया शेरांवाली ए ।।

स्वर्ग से सुन्दर, सपनों से प्यारा, है तेरा दरबार।
जहाँ तेरा प्यार मिला है, मुझे हर बार मिला है ।।टेर।।
रोशन है मेरी दुनियां, तेरे ही प्यार से, सब कुछ मिला है मुझको, इस दरबार से,
तेरी शरण में आके मिला है-२, एक नया संसार ।।१।।
जब अपना हाथ मेरे, सिर पे फिराती, मेरे ये सारे संकट, पल में मिटाती,
हम पर अपनी ममता लुटाकर-२, बना दिया हकदार ।।२।।
तुम हो हमारी मैया हम हैं तुम्हारे, तेरे आगे फीके लगते, जग के नजारे,
श्याम को एसी मैया मिली है, जग की क्या दरकार ।।३।।

डमरू बजाये, अंग भस्मी रमाए, और ध्यान लगाए किसका,
न जाने वो डमरू वाला, -२ सब देवों में-२, है वो देव निराला
मस्तक पे चन्दा, जिसकी जटा में है गंगा,
रहती पार्वती संग में, सवारी में बूढा नन्दा-२,
वो कैलाशी, है अविनाशी, पहने सर्पो की माला ।।
बाघम्बरधारी, वो भोला शंकर त्रिपुरारी,
रहता मस्त सदा, जिसकी महिमा है भारी, है न्यारी
भोला भाला, हे मतवाला, पीवे भंग का प्याला ।।
ताराचन्द गाए शिव शम्भू को ध्याये,
जो भी मांगे सो पाए, दर से खाली न जाए-२,
बडा है दानी, बडा ही ज्ञानी, है वो जग रखवाला ।।

एक दिन वो भोला भण्डारी, बन करके बृजनारी। गोकुल में आ गये है।
पार्वती भी मना के हारी, ना माने त्रिपुरारी, गोकुल में आ गये है ।।टेर।।
पार्वती से बोले, मैं भी चलूँगा तेरे साथ में,
राधा संग श्याम नाचे, मैं भी नाचूंगा तेरे साथ में
रास रचेगा बृज में भारी, हमें दिखाओ प्यारी।।
ओ मेरे भोले स्वामी, कैसे ले जाऊँ अपने साथ में,
मोहन के सिवा वहाँ, कोई पुरूष न जाए रास में,
हँसी करेगी बृज की नारी मानो बात हमारी।।
ऐसा बना दो मुझे, जाने ना कोई इस राज को,
मैं हूँ सहेली तेरी, ऐसा बताना बृजराज को,
लगा के बिन्दिया पहन के साड़ी, चाल चले मतवारी।
हँस के सती ने कहा, बलिहारी जाऊँ इस रूप पे,
एक दिन तुम्हारे लिए, आऐ मुरारी इस रूप में,
मोहनी रूप बनाया मुरारी, अब ये तुम्हारी बारी।।
देखा मोहन ने, समझ गये वो सब बात रे,
ऐसी बजाई बंशी, सुध-बुध भूले भोलेनाथ रे,
सर से खिसक गई जब साड़ी, मुसकाए गिरधारी।।
दीन दयालु तेरा, तब से गोपेश्वर हुआ नाम रे,
ओ भोले बाबा तेरा, वृन्दावन में बना धाम रे,
ताराजन्द कहे ओ त्रिपुरारी, रखियो लाज हमारी।।

कीर्तन की है रात-२, बाबा आज थानै आणो है, थानै कोल निभाणो है...
दरबार साँवरिया, ऐसो सज्यो प्यारो, दयालु आपको,
सेवा में साँवरिया, सगला खड्या डीक, हुकुम बस आपको,
सेवा में थारी-२, म्हनै आज बिछ जाणो है... थाने
कीर्तन की है त्यारी, कीर्तन करां जमकर, प्रभु क्युं देर करो,
वादो थारो दाता, कीर्तन में आणे को, घणी क्युं देर करो,
भजनां सुं थानै-२, म्हनै आज रिझाणो है... थाने
जो कुछ बण्यो म्हंसू, अर्पण प्रभु सारो, प्रभु स्वीकार करो,
नादान सूं गल्ती, होती ही आई है, प्रभु मत ध्यान धरो,
नन्दू साँवरिया-२, थारो दास पुराणो है... थाने

गोविन्द मेरा है, गोपाल मेरा है ये मुरलीवाला दीनो का दयाल मेरा है
मुझको कान्हा बड़ा ही प्यार करता है, ये जो करता कोई ना कर सकता है
यही जाने मुझे, पहचाने मुझे, मेरे भावों को येही तो समझता है
हमर्दद मेरा है, हमराज मेरा है...ये मुरलीवाला
जब कभी भी ये दिल उदास होता है, मेरे दिल को ये एहसास होता है
तेरा मालिक है ये, प्रतिपालक है ये, इसके रहते तू क्यूँ निराश होता है
ये यार मेरा है, आधार मेरा है...ये मुरलीवाला
मेरी लागी लगन नटखट से है, मेरा कान्हा तो दुनियाँ से हटके है
बिन्नू जितना रिझा, उतना आये मजा, इसका प्रेमी ना दर दर भटकता है
अनुराग मेरा है, यही भाग्य मेरा है...ये मुरलीवाला

थाली भरकै ल्याई खचड़ो ऊपर घी की बाटकी। जीमो म्हारा श्यामा धणी,
जिमावै बैटी जाट की।। जिमावै बेटी जाट की ।।टेर।।
बाबो म्हारे गाँव गयो है, ना जाणूं कद आवैलो। ऊकै भरोसै बेठ्यो रह तो,
भूखो ही रह जावैलौ। आज जिमाऊँ तनै खीचड़ो काल राबड़ी छास की...
बार बार मन्दिर ने जड़ती बार बार मँ खोलती। कैयां कोनी जीमै मोहन,
करड़ी कराडी बोलती। थे जीमोला जद मैं जीमूं, मानूं ना कोई लाट की...
पड़दो भूल गई सांवरिया, पड़दो फेर लगायो जी। धाबळियै की ओट बैठकर,
श्याम खीचड़ो खायो जी। भोळा ठाळा भगतां सैं, सांवरिया कैयां आँट की...
भगती हो तो करमा जैसी, सांवरियो घर आवैलो। सोहनलाल लोहाकर प्रभु का,
हर्ष हर्ष गुण गावैलो। सांचो प्रेम प्रभु सैं हो तो, मूर्ति बोले काठ की...

लुट रहा, लुट रहा, लुट रहा रै। मैया का खजाना, लुट रहा रै ।।टेर।।
लूट सके तो लूट ले बन्दे, काहे देरी करता है,
ऐसा मौका फिर ना मिलेगा, सबकी झोली भरती है,
इसकी शरण में आकर के, जो कछु भी मांगा मिल गया रे ।।१।।
हाथों हाथ मिलेगा पर्चा, ये दरबार निराला है,
घर-घर पूजा हो कलयुग में भक्तों का बोल बाला है।
जिसने माँ का नाम लिया, किस्मत का ताला खुल गया रे ।।२।।
फतेहपुर जैसा इस दुनिया में, कोई भी दरबार नहीं,
ऐसी दयालु बनवारी मां, करती कभी इन्कार नहीं,
कौन है ऐसा दुनिया में, किसको ये मैया नट गई रे ।।३।।

आया फेर जन्मदिन तेरा–2 भगत सब नाचेगे हिलमिल के
हेप्पी बर्थडे टु यु – मैया बर्थडे टु यु – मैया.....
आज बंटने लगी है बधाईया, भगत सब लूटेगे हिलमिल के
आज लागे ना किसी की नजरीया, तो नजर् तारेगे हिलमिल के
आज छोड दो लाज शर्म को,क के मस्ती लूटो रे हिलमिल के
सजधज के आई सब सखीयां के मंगल गायेगे हिलमिल के
अंबरीश कह भाग्य जगालो के दर्शन पायेगे हिलमिल के

जनम दिन बाबा का आया है फिर आज
भगत सब नाचो रे आज भरे दरबार... जनम दिन....
बाबा को रिझाने, भजन सुनाने, भक्तों की टोली आई
नाच के दिखायेगें, तालीयाँ बजायेगें, फिर पायेगें बधाई
नाच कुद जो लेवे बधाई, वो सच्चे हकदार... जनम दिन....
सुनके पुकार, बाबो लियो अवतार, करे भक्तां का मनचाया
भाग्य जगाने, बिगड़ी बनाने धरती पे चलके आया
आज तो मूर्ति बोल पडेगी, लगता है बारंबार... जनम दिन
शर्म को छोडो, भरम को तोडो, नाचो लोग लुगाई
बाबा ही नचाने वाला, बाबा ही गवाने वाला, दिल से करूं बढाई
अंबरीश मन से नाचके देखो, भरदेगा भंडार... जनम दिन

आसरो बालाजी म्हाने थारो, थे कष्ट निवारो, पधारो म्हारे आंगणे पधारो,
थारी म्हें बुलावा जय-जयकार, ओ बालाजी।।

सालासर में सज्यो है दरबार, अंजनी को लालो दुःखिया रो दातार
थाने जो भी ध्यावे, करो थे बेड़ा पार, काट द्यो घणो ही दुःख म्हारो, थे कष्ट निवारो।।

सारिया हो थे रामजी रा काज, शरण पड्या हा राखो जी म्हारी लाज
बैठयां म्हें उडीकां बजरंगी थाने आज पालनो नहीं रे कोई लारे, थे कष्ट निवारो

बल देवो बाबा म्हें बड़ा कमजोर, थे पालनहार म्हें पापी घणघोर
थे ना सुणोगा, सुनेगो कुण और थारो ही यो सरल बिचारो, थे कष्ट निवारो।।

छम छम, नाचे देखो वीर हनुमाना, कहते हैं लोग इसे, राम का दिवाना ।।टेर।।
पावों में घुघँरू, बांध के नाचे, रामजी का नाम इसे, प्यारा लागे,
राम ने भी देखो इसे, खुब पहचाना ।।1।।
जहां जहां कीर्तन, होता श्री राम का, लगता है पहरा वहां वीर हनुमान का,
राम के चरण में है, इनका ठिकाना ।।2।।
नाच नाच देखो, श्रीराम को रिझाये, बनवारी रात दिन, नाचता ही जाये,
भक्तों में भक्त बड़ा, दुनिया ने माना ।।3।।

दुनिया चले ना श्री राम के बिना। राम जी चले ना हनुमान के बिना ।।टेर।।
जब से रामायणा पढली है, एक बात मैंने समझली है-।
रावण मरे ना श्री राम के बिना, लंका जले ना हनुमान के बिना ।।1।।
लक्ष्मण का बचाना मुश्किल था, कौन बूंटी लाने के काबिल था-।
लक्ष्मण बचे ना श्री राम के बिना, बूंटी मिले ना हनुमान के बिना ।।2।।
सीता हरण की कहानी सुनो, बनवारी मेरी जुबानी सुनो-।
वापिस मिले ना श्री राम के बिना, पता चले ना हनुमान के बिना ।।3।।
बैठे सिंहासन पै श्रीरामजी, चरणों में बैठे है हनुमानजी-।
मुक्ति मिले ना श्रीराम के बिना भक्ति मिले ना हनुमान के बिना ।।4।।

जीमो जी भोग लगाओ

भोग

(तर्ज : ओ फिरकी वाली)

आओ-आओ, दादीजी बेगा आओ ।
जीमो जी भोग लगाओ, है छप्पन भोग तैयार जी ।
ओ थारा टाबरिया कर है मनुहार जी ।।टेर।।

केशरिया बरफी, कलाकंद रबडी, पेडा इमरती बालूशाही
लाडू, बूंदिया, जलेबी, रसगल्ला, गाजर पाक, रसमलाई
गुलाब जामुन, शक्करपारा-२, घेवर न्यारा न्यारा
जीमो आके घी तो थे और घलावो जी ।। (१) जीमो जी -

दालमोठ, पकौडी, कचौडी, भुजिया, पापड चिवडो
कढ़ी, राबडी, साग सांगरी को, बाजरे को दादी खीचडो, रायता में जीरा को २
पीओ मार सबडको साग काचरी की चटनी थे खाओ ।। (२) जीमो जी -

आम, अमरूद, अंगूर, अनानस, आलू बूखारा, अनार, धर्‌या
केला, सेब, पपीता, चीकू, सन्तरा, मोसंबी रसभर्‌या काकड़िया रे लाल
मतीरा - २ और टमाटर खीरा नीबूं खाटो थे थोडा छिटकाओ ।। (३) जीमो जी -

काजु किशमिश, नौजा, खूरमानी, खोपरा, छुहारा, बादाम ल्यो
जीम जूठ कर आचमन करके फिर थोडो आराम ल्यो
सौफ ईलाअची हाजिर करदी - २ सागे मिश्री धर दी
कोई नागरिया पान चबाओ ।। (४) जीमो जी -

छप्पन भोग परोस्‌या थारे भगतां दादीजी स्वीकार करो
प्रचार समीती थारी महिमा गावे अन धन को भण्डार भरो
लीला थारी सब जग जानी - २ थे हो फतेहपुर वाली
बिगडी टाबर की थे ही तो बनाओ ।। (५) जीमो जी -

जन्म दिन मैया का

होय होय जन्म दिन मैया का - २
आई शुभ घड़ी आई, देखो खुशियां है छाई
सब झूम के नाचे आज, जन्म दिन मैया का

भक्तों ने माँ का जन्म दिन मनाया, फूलों के पालने में माँ को बिठाया
देखो झूल रही मैया आज, जन्म दिन मैया का ।।१।।

भगतों का जबसे खबर लगी है, मैया के दर पे भीड़ लगी है,
देखो लाये है सब उपहार, जन्म दिन मैया का ।।२।।

लाल चुनडिया में लगती माँ प्यारी, नजर न लग जाये माँ को हमारी
चलो निजरां उतारा सब आज, जन्म दिन मैया का ।।३।।

मैया का जन्म दिन हर साल आये, भक्तों हम सब मिलके मनाये
दादी दे दया को आशीर्वाद, जन्म दि मैया का ।।४।।

बधाई सारे भगता ने

सावा लीयो अवतार बधाई सारे भगता ने
बधाई सारे भगता ने बधाई सारे भगता ने,
बाज्यो रे बाज्यो सुवर्ण थाल बधाई सारे भगता ने

आज यो अगणों धन्य हुयो हैं
सावा जन्म हुयो है
नाचो रे नाचो दे दे ताल, बधाई सारे भगता ने....२

खुश खबरी या सबने सुनावां
झुमा रे नाचा म्हे तो मौज मनावां
सावा लीयो अवतार, बधाई सारे भगता ने....२

महला में अगनो अगने में पलनो
पलने में झुल रही परख्वचंचद जी की लाली
निजरां उतारा बारम्बार बधाई सारी भगता ने....२

फतेहपुर वाली घर आई.....

बांटो बांटो आज बधाई, फतेहपुर वाली घर आई,
आई सिंह पे होके सवार ये मैया कर सोलह सिंगार ।
बड़ा ही शुभ दिन आया, भक्तों ने तुझे सजाया
तेरा उत्सव है मनाया ओ मैया आ ऽऽऽ
प्यारी माँ का लाड़ लड़ाओ, माँ को मीठे भजन सुनाओ ।। आई सिंह पे...
पाँवो में पायलिया, ओढ़ के चुनरिया
हाथो में मेहंदी लगाके आई माँ आ ऽऽऽ
पावन मंगल बेला आई, देखो बाज रही शहनाई ।। आई सिंह पे...
सजा दरबार तुम्हारा, बड़ा सुंदर है नजारा
श्या को लगे है प्यारा ओ मैया आ ऽऽऽ
मैया लाई माल खजाना,लूट रहा है सारा जमाना ।। आई सिंह पै...

नाजो गावो, खुशी मनावो

नाजो गावो, खुशी मनावो, झूमो रे सब आज दादी आई है,
आई है दादी आई है, भक्तां के घर आई है ।।

फतेहपुर वाली दादी माँ, सिंह पर चढ़कर आई है,
सिंह पर चढ़कर आई माँ, रूप अनोखो सजाई है ।
महिमा भारी लीला न्यारी, कलियुग की अवतार ।। दादी आई है... ।।१।।

सिर चुनड़िया ताराँ की, माथे बोरला न्यारो है,
गल बिच हार हैं हीरा को, लागे सबने प्यारो है।
काना कुण्डल रंग बिरंगा, गल फूलां को हार ।। दादी आई है... ।।२।।

लाल चूड़लो हाथां में, मेहन्दी लाल रचाई है,
हीरा जड़ी नथ अति प्यारी, माथे बिंदिया लगाई है ।
झन-झन करती पायल बाजे, देखो हर्ष अपार ।। दादी आई है... ।।३।।

ऐसो रूप सजाकर माँ, भक्तां के घर आई है,
जो चाहो थे माँगल्यो, आज खजानो ल्याई है।
झोली भरल्यो, दर्शन करल्यो, है माँ लखदातार ।। दादी आई है... ।।४।।

चरणां का थार सेवक माँ दर्शन करण आया हां,
दु:ख विपदा सब दूर करो, या फरियाद ल्याया हां ।
थे ही दुर्गा, थे ही काली, थारो यो संसार ।। दादी आई है... ।।५।।

स्व. श्री बालकिशनजी धानुका

स्व. श्रीमती भगवानदेवी धानुका

स्व. कु. शरदकुमार धानुका

की पुण्य स्मृति में सप्रेम

लक्ष्मणप्रसाद धानुका
सुशीलकुमार धानुका
विश्वनाथ धानुका
अनिल रामचंद्र धानुका

मे. दुर्गा इन्टरप्रायजेस

३०४, गोकुल रेसीडेंसी, एच विंग, ठाकुर विलेज
कांदिवली (पूर्व), मुंबई - ४००१०१. मो: ९३२४११२२३६

श्री धानुका सावा शक्ति प्रचार समिति
(मुंबई)

- ट्रस्टीस -

स्व. श्री गयाप्रसादजी धानुका
(प्रेरणा स्तोत्र)

श्री मदनमोहनजी धानुका
(मानद ट्रस्टी)

श्री लक्खीप्रसादजी धानुका
(अध्यक्ष)

श्री नरेशकुमारजी धानुका
(उपाध्यक्ष)

श्री मंगलजी धानुका
(उपाध्यक्ष)

श्री राजेंद्रकुमारजी धानुका
(उपाध्यक्ष)

श्री पवन दामोदरजी धानुका
(सचिव)

श्री कमलजी धानुका
(सहसचिव)

श्री विश्वनाथजी धानुका
(कोषाध्यक्ष)

श्री अंजनीजी धानुका
(सहकोषाध्यक्ष)

www.savashakti.com